



: श्री

द्रव्यानुयोग-हितीय प्रवेशिका.

ले॰ –मुनिश्री ज्ञानसुन्दरजी मा॰

प्रकाशक, श्री जैन नवयुषक मिन्नमंडल मु॰ लोहारट (माग्वाट) इत्य सहायक श्रीसुखसागर जानप्रवारक सभा श्री भग्धर्माजी सूत्रकि युजाकि ं श्रामदनीसे

्र आमटनीसं

इन पुस्तकोंकी भागदिनसे और भी ज्ञानप्रचार बहाया जावेगा ।

भी सुलसागर ज्ञान प्रचार ज्ञानविन्दुत १। CHOCKE KEKE यथ श्री त्रव्यानुयोग द्वितीय प्रवेशिका जिम्मे ञ्राठ कर्मांकि १५⊏ उत्तर प्रकृति तथा पैतालीस त्रागमोंकि सूची लेखक. श्रीमद्भपकेश (कमला) गच्छीय मनि श्री ज्ञानसुन्दरजी महाराज **मकाशक** श्री जेन नवयुवक मित्रमङल प्र॰ लोहावट (माग्वाड) प्रथमात्रति ५००० किंमत १०० नक्लका क

को आपश्री ठीर तोरमे बतला रहे हैं पाचीन इतिहाम द्वारा हमारे जैनधर्मरा हमारे पूर्वेनोंका गीरव, हमारी सपति, हमारा प्रेम ऐक्यता उद्यारता आदिका दिग्दर्शन कराते हवे हमारेपर भडा भारी उपरार कर रहे हैं इनींका फाउ यह हुवा कि यहापर " श्री जैन नव सुबक मित्र मटल " रि स्थापना हुउँ है जिनोंका खाम उद्देश ममान मैवा और नातप्रचार बडानेका है मायमें हानिकारक पटीहरू रुद्रीयोगें तथा पात्रत सरचानोंको कम करना और अपन पार्नीकी मापीक साटि बाली कि प्रवृति प्रयत्न उपदेश तथा भाषण करते हुने तफे आकर्षित हो नहाँ है स्वल्पराल में भी इस मित्र मटलने युद्ध मजनोरी मदल से अच्छी सफलता प्राप्त करी है भविष्यके लिये उत्साह भी बडता जा रहा है हम शामनदेव में प्राथना करते हैं कि इस मित्रमंडरुका दिन प्रतिदिन उत्साह बदता रहें और एमे महा माओंका विहार मरम्थल जैसे देशोमें हमेशो होने रहे अन्य मुनिमहारानोंमे भी हमारी नगता पुबक बिनली है कि जाप श्रीमान मरम्थल जैसे अपठित क्षेत्रमे बिहारू हमलोगी पर उपनार करे समन जाने से मारवाटी लोग काम रर बतलानेवाले हैं। गाति

अवनीय

१९८० रा मीती ह

न्होगमल कोचर प्रसिदन्र श्री नैन नवपुवर मित्र मटळ, स लोहावट—माखाड

अथश्री

त्राठ कर्मों कि १५७ प्रकृति।

जीवका स्वभाव चैतन्य भीर कमोंका स्वभाव जड़ एव जीव भीर कमोंका भिन्न भिन्न स्वभाव होने पर भी जसे पूलमें धातू तीलॉमें तेल दूधमें घृत है, इसी भाषीक धनादि कालसे जीव और कमों के सबन्य है जैसे यत्रादि के निमित्त कारणसे धृलसे धातु तीलॉसे तेल दूधसे घृत अलग हो जाते

कारणसे धूलसे घातु तीलोंसे तल दूपसे घृत अलग हो जाते हैं इसी माफीक जीवों को झान दर्शन तप जप पूजा प्रभावनादि श्चम निमत्त मीलनेसे कमी और जीव अलग अलग हो जीव सिद्ध पदकों प्राप्त कर लेते हैं

अनतक जीवों के साथ कर्म लोगे हुने हैं तपतक जीव अपित दशाको ग्रुल मिध्यात्वादि परगुख में परिश्रमन करता है जैसे सुवर्षा धाप निर्मल धकलक कोमल ग्रुण-गला

करता है जस सुवर्ण ध्याप ानमल धकलक कामल ग्रुगनाला है किन्तु अग्निका सयोग पाके ध्यपना ध्यसली स्वरूप झोड उप्णवा को घारण करता है फीर जल वायुका निमन्त मीलने पर श्रानिका त्यागकर अपने असली ग्रुगुको घारण कर लेता है इसी माफीक जीन भी निर्मल धकलंक श्रमृत्ति है परन्तु

8

मिध्यात्मादि चलान के निमच कारणमे चनेक प्रशार के रूप भारण कर ससारमें परिभ्रमन करता है जर मक्नान दर्गनादि का निमित्त प्राप्त कर मिद्यारमादिका सगरवाण चपना धमली स्वरूप भारण कर सिद्ध अरस्याकों प्राप्त कर लेवा है

जीत यपना स्तरूप कीस कारणसे भूल जाता है ?

जैसे कोइ ब्यकलमद समजदार मनुष्य भिर्देरापान करनेसे अपना मान सुल जाता है फीर उन मिदरा का नागा उतरने पर पश्चाताप कर बण्के कार्यमें प्रश्नित करना है इभी मासीक अनत जानदर्गनकों ना ना महिरा का नाम के निकल्प ने मोहिरि कर्मदलक मेहिरि क्षित करने पर बागा ना कर्म न पर्के कार्यमें मोहिरि करने पर बागा ना कर्म न पर्के को मौतानके निजीत करने पर बागा नाम कर्म न पर्के तो बैतन्य कर्म हुन हो प्रपन्न स्वरूपमें राम्या करता हुन विद्य पदकों प्राप्त करते हैं कर्म मा पर्के हैं कि पर्के क्षीत करने पर बागा करता हुन विद्य पदकों प्राप्त करते हैं कि प्रयुक्त पर्के क्षीत पुरानों के पर्के क्षीत पुरानों है प्रयुक्त करने कि प्रपन्त करने करने कि प्रयुक्त करने कि प्रमुक्त करने कि प्रयुक्त करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने कि प्रमुक्त करने करने कि प्रमुक्त करने कि प्रम

दुद्गलोंको प्रहन करते हैं। वह पुद्गल आत्मा के प्रद्रगोंपर चीटक जाते हें व्यर्शन व्यात्म प्रदेशों के साथ उन कर्म पुद् गलोंका छीरनिरकी माक्षीक बन्ध होते हैं निनोंने यह कर्म पुद्गल व्यात्मके सुलांको माखा बना देते हैं जैने मूर्यको

होते हैं उन अध्यवसायोंकी प्याकर्पणामे जीव शुमाश्चम कर्म

चादल , कारा प्याता है। जैंसे जैसे अध्यवमायांकी मदता तीजता होती है वसे वसे कमों के अन्दर रस तथा स्थित एट जाति है वह कमें जन्में के बाद जह ममें कीतने कालसे विपाक उदय होते है उसकों अजादा काल कहते है जैसे हुन्डीके अन्दर सुदत डाली जाति है। कमें दो प्रकारसे भोगवीये जाते हैं। दे अपने अपने अपने कमों को प्रवास काल कहते हैं जैसे हुन्डीके अन्दर सुदत डाली जाति है। कमें दो प्रकारसे भोगवीये जाते हैं। ११) प्रदेशोदय (२) विपाकोदय जिस्में तप जप जान म्यान पूजा प्रभाजनादि करनेसे दीर्थ कालके मोगवने योग्य कमोंको आकर्षण कर स्वष्ण कालमें भोगव लेते हैं जिसकी अजार अदस्थों को नहीं पढती हैं उसे प्रदेशोदय कहते हैं तथा वर्ष विपाकोदय होनेसे कीवोंको अनेक प्रकारको जिटम्यना से मोगवना पडे उसे निपाकोदय कहते हैं।

श्रञ्ज कर्मोद्य भोगवते समय व्यातंध्यानादि श्रञ्जम कर्मने से उन श्रञ्जम कर्मोमं क्यार भी श्रञ्जम कर्मे स्थिति तथा श्रञ्जमाग रसिक द्यद्धि होती है तथा श्रञ्जमाग रसिक द्यद्धि होती है तथा श्रञ्जमाग रसिक द्यद्धि होती है तथा श्रञ्जम कर्मे भोगनते समय छम क्रिया भ्यान करनेमे यह अश्रुम पुद्रगल भी छमपणे प्रणम जाते है तथा स्थितिवात रस्पात कर यहुत कर्म प्रदेशोंसे भोगवके निर्जरा कर देते हैं॥ छम कर्मोंद्रय भोगवते समय श्रञ्जम क्रिया करनेसे वह श्रम कर्म पुद्रगल श्रञ्जमपणे प्रणमते हैं व्यार श्रम क्रिया करनेसे उन श्रम कर्मोंद्र श्रीर मा श्रमिक द्यद्धि होती है वह श्रम कर्म ग्रह्मे सुखे सुत्रो भोगव के श्रन्तमं मालपदको प्राप्त कर लेते हैं।

साहुकार अपने धनका रचण कर कर सकेंगें कि प्रथम

उन चोर श्रानेके रहस्तेकों बन्ध करवादे या पेहरादार रखदे तो घनका रचण कर सके इसी माफीक शासकारोंने फरमाया है कि प्रथम चौर याने कर्मीका स्वरूपकों ठीक तौरपर समजी फीर कर्म व्यानेका हेतु कारणको समजो फीर नया कर्म ब्रानेके रहस्तेको रोको और प्रराणे कर्मोको नाश करनेका उपाय करी ताके ससारका अन्त कर यह जीन अपने निज स्थान (मोच)

को प्राप्त कर सादि अनत माग सुखी हो। कर्मीकि विषय के अनेक ग्रन्थ है परन्त साधारण मूल-व्योंके लिये एक छोटीसी कीताव हो तो वह सुविधा के साथ लाम उठा सके इस हेतुसे इस छोटीसी कीवाम द्वारा मूल आठ कर्मों के उत्तरकर्म प्रकृति १४= का सचिप्त विवरगुकर आपकि

सेवामें रखी जाति है आशा है कि आप इस कर्म प्रकृतियोंकों कठस्थ कर आगे के लिये अपना उत्साह बढाते रहेगें इत्यलम्। ॥ मूल आठ कर्मोंकि उत्तर प्रकृति १५८॥

(१) झानावणियकर्म-चित यके झान गुरावर्से सेव रस्सा है। (२) दर्शनावार्णियकर्म-चतन्यके दर्शन गुणकों रोक रखा है। (३) वेदनियक्म-चेतन्यके श्रव्याबाद गुखकों रोक रखा है।

(8) मोहनियकम-चैतन्यके चायक गुणकों रोक रता है। (४) बायुप्पकर्म-चितन्यके अटल अपगाहाना गुणकों रोक

रपा है।

(६) नामकर्म-चित्रयके श्रमृत्ति गुलकों रोक रखा है।

(७) गौत्रकर्म—चैतन्यके अगुरु लघु गुएकों सेक रखा है।
 (८) अन्तरायकर्म—चैतन्यके नीर्य गुणकों सेक रखा है।

(=) अन्तरायकमे—चतन्यक नीय गुणका राक रखा ह । इन आर्टी कर्मोंकि उत्तर प्रकृति १५८ हैं उनींका विवरण— (१) झानावर्थियकमें जेसे घाणीका बहल-याने घा-स्त्रीके वहलके नैत्रींपर पाट्टा पान्घ देनेसे कीसी वस्तुका ज्ञान

नहीं होता है इसी माफीक जीवोंके ज्ञानावर्णिय कमेपडल श्राजानेसे पस्तुतत्त्वका झान नहीं होता है। जीम झानावरखीय कर्मिक उत्तर प्रकृति पाच है यथा-(१) मतिज्ञानावार्थिय, ३४० प्रकारके मीतज्ञान है (देखो शीववोध भाग ६ ठा) उनके यापरण करना अर्थात् मतिसे कोमी प्रकारका ज्ञान नही होने हेना अन्छी बुद्धि उत्पन्न नहीं होना तत्त्व बस्तपर विचार नहीं करने देना प्रज्ञा नहीं फेलना-पदलेंमें खराब मति-उद्धि-प्रज्ञा-विचार पैदा होना यह सन भतिज्ञानावार्णियकर्मका ही प्रभाव है (२) श्रीतज्ञानापर्णिय श्रुतिज्ञानको रोके, पठन पाठन श्रमण करतेंकी रोके, सदज्ञान हीने नही देवे योग्य मीलनेपर भी छत्र सिद्धान्त वाचना सुननेमें अन्तराय होना-बदलेमें मिथ्याज्ञान पर श्रद्धा पठन पाठन श्रवण करनेकि रूची होना यह मब श्रुतिज्ञानानिर्णियकर्मका प्रसाव है (३)

रूपी होना यह मय श्रुतिज्ञानानिष्यकर्मका प्रभाव है (३)
श्रुप्रियानाविष्यकर्म श्रुनेक प्रकारके श्रुविद्धानकों रोके
(४) मनःपर्यग्रज्ञानानिष्यकर्म श्राते हुव मनःपर्यवद्यानको
रोके (४) केरलञ्जानाविष्यकर्म समूर्य जो केनलज्ञान है
उनमें श्राते हुवेकों रोके इति ॥

(२) दरीनावार्णियकर्म-राजाके पोलीया जैंगे कीसी मनुष्पकों राजासे मीजना है परन्त वह पोलीया मीलने नही देत है इसी माफिक जीवोंको धर्म राजा से मीलना है परन्तु दर्श नावर्णियकमें मीलने नहीं देते हैं जीसकि उत्तर प्रकृति ना है (१) पद्य दर्शनाविषयकर्म प्रकृति उदय मे जीवोंको नेत (श्राँपों) हिन पना दे अर्थात एकेन्द्रिय पेइन्ट्रिय तेइन्ट्रिय जातिमें उत्पन्न होते हैं कि जहाँ नेतींका जिल्हाल प्रभाव है और चौरिन्द्रिय पाचेन्द्रिय जातिमें नैय होने पर भी रातीदा होना काना होना तथा निलंदुल नहीं दीराना हमें चभ दर्शनाव-णियक्रमें प्रकृति कहते हैं (२) खनश दर्शनार्याणयक्रमें प्रकृति उदयमे राचा जीम नारु कान और मनसे जी उस्तका ज्ञान होता है उनींको रोके जिस्का नाम अचल दर्शनावर्णिय कहते हैं (रे) अरधि दर्शनार्राखंबकर्म प्रकृति उदय अरधि दर्शन नहीं होने देवे अधीत अपि दर्शनको सेके (४) केंपल दर्शनामधिय कमोदयः केनल दर्शन होने नही देने अर्थात् षेवल दर्शनपर कागरण कर रोक रख ॥ तथा पाच निद्रा निद्रा दर्शनाविष्यकर्म प्रकृति उदय से निद्रा स्नाति है परन्तु सुरने सोना सुरंग जावत होना उमे निंद्रा फहते हैं । और सुरो सोना द खपूर्वक बाबत हाना उसे निद्रानिद्रा कहते है। खंडे खंडेकों तथा गेंट गेंठेकों निंद्रा आगे उसे प्रचला नामाके निंद्रा कहते हैं। चलते फीरतेकी निंद्रा आये उसे प्रचला प्र चला नामकि निद्रा कहते हैं। दिनकों या रात्रीमें चितान

(विचातहुरा) किया कार्य निंद्राके अन्दर कर लेते हो उँस स्यानिर्द्ध निद्रा कहते हैं एव न्यार दर्शन और पाच निद्रा भीजाने म नी प्रकृति दर्शनावर्धियकर्मकि हैं।

(३) वेदनियकर्म—मधुलीप्त छुरी जैसे मधुका स्वाद मधुर है परन्तु छुरीकी घार तीच्छ भी होती है हसी माफीक जीरोंको शाताबेदिन सुख देती है मधुवत और श्रमाताबेदिन दुःख देती है जुरीवत् जीमिक उत्तर प्रकृति दोय है माताबेद-निय, असाताबेदिनिय, जीरोंको शरीर-क्रुडुम्ब धन धान्य पुत कलित्रादि श्रनुकुल मामग्री तथा देवादि पौद्मलीक सुख प्राप्ति होना उमे माताबेदिनियकर्म प्रकृतिका उदय कहते है और भारीरमें रोग निधेनता पुत्र कलित्रादि श्रतिकुल तथा नरकादि के दु खोका अनुभन करना उसे श्रमाताबेदिनियकर्म प्रकृतिकहते हैं।

(४) मोहिनयकर्म मिदरापान कीया हुवा पुरुप थे-मान है। जाते हैं फीर उनकीं हिताहितका ख्याल नहीं रहते हैं इमी माफीक मोहिनियक्रमींद्रयसे जीव अपना स्टब्स भूल जानेने उसे हिताहितका ख्याल नहीं रहता है जिस्के दो भेद हैं दर्शनमोहिनिय मन्यक्त गुखको रोके और चारित्रमोहिनिय चारित्र गुखको रोके जीसिक उत्तर प्रकृति अठातीस है जिस्का मूल भेद दोय हैं (१) दर्शनमोहिनिय (२) चारित्र मोहिनिय जिस्में दर्शनमोहिनिय कमिक तीन प्रकृति हैं (१) मिथ्यात्व-मोहिनिय (२) मन्यक्त मोहिनिय (१३) मिश्रमोहिनिय-जेमे एक कोद्रय नामका अनाज होते हैं जिस्को सानेमे नशा,

(क) जिस कोद्रव नामके धोनकों छाली सहित खा-

श्रा जाता है उन नशाके मारे अपना स्वरूप भूल जाता है।

नेसे जिलकुल ही बैमान हो जाते है इसी माफीक मिध्यात्व मोडिनिय क्योंदय जीव व्यपने खरूपको भूलके परगुरामें रम-णुता करते हैं अपीत तत्त्व पदार्थिक तिप्रीत श्रद्धनाकों मि-ध्यात्व मोहनिय कहते है जिस्के आत्म प्रदेशीयर मिध्यात्वदलक होनेमे धर्मपर श्रद्धा प्रतित न करे अधर्मिक प्ररूपना करे इत्यादि । (ख) उस कोड्य धानका अर्थ निशुद्ध अर्थात् कुछ छाली उतारके ठीक किया हो उनके त्यानेन कभी सारचेती आदि है इसी माफीक मिश्रमोहनीपाले जीवोंकों कुच्छ श्रदा कुच्छ अभद्धा मिथमात रहते है उनाको मिश्रमोहनि कहते हैं लेफीन वह है मिध्यात्वमें परन्तु पहलों गुणस्थान छुट नानसे मृष्य है। (च) उम कोद्रव धानकों खाखादि मामग्रीसे धोके विश्रद्ध वनाइ परन्तु उन कोद्रव घोनका मृत्त जातिखमाय नही जानेसे गलकाक बनी रहती है हमी माफ्रीक सायक सम्यक्त काने नहीं देवे और सम्यक्तका विराधि होने नहीं देवे उमे सम्यक्त मोहनिय कहते हैं। दशनमोह, सम्यक्त पाति हैं। दूसरा जो चारित मोहानिय कर्म है उसका दी नेद हैं (१) कपाय चारित्र मोहनिष (२) नोकपाय चारित्र मोह-

निभ जिसमें क्याय चारित मोहनिय कार्यके १६ मेद है। जिस्में एकेकके क्यार च्यार मेद भी हो सक्ते हैं औन अनतानुबन्धी काथ अनतानुबन्धी जेता, अमरपास्चारित जेना, प्रत्यास्व्यानि जेसा और सम्बन्धन जेमा एवं १६ मेटोंका ६४ मेद भी होते हैं यहापर १६ मेद ही लिखते हैं।

श्रनतानुबन्धी कोध-पत्यरिक रेखा सादश, मान बजवे

न्यम् सादश, माया वासाकी कह सादश, लोम करमजी रेस्परे रम् सादश पात करें तो सम्यवस्तग्रुयाकि स्थिति जावत् जी बकि, गति करें तो नरकि ॥ अप्रत्याख्यानि क्रोध तलावाँ तह, मान दान्तकास्थम, माया मेंद्राका गूँग, लोम नगरका कीच पात करें तो शायकके बतोकि स्थिति एक वर्षाके, गति तीयैं कि ॥ प्रत्याख्यानि क्रोध गाडाकी लीक, मानकाष्टका स्थम माया चालता बैलकाम् न, लोम नेशोंके श्रञ्जन-गात करें तो सतुष्पक बतकि, स्थिति करें तो न्यार मामकि, गति करें तो मतुष्पक ॥ सज्बलनका कोध पायीकी लीक, मानत्यक्ता स्थम, माया

शोलंह प्रकारकी कपायकों कपाय मोहनिय कहते हैं

नी नोकपायमञ्जित-हासा-कतृहल मश्करी करना

मय-डरना विस्मय होना । शोक-फीकर चिंता आर्वष्या

करना । जुमप्या-ज्लानी लाना नफरत करना । रति-आर्यम दिकार्योमें खुशी लाना । अरावि-सयमादि कार्योमे आर्य करना । स्नियद-जिस प्रकृतिके उदय पुरुपोंकि अभिलापा क

चांमकी छाल लोभ इलदिका रग, यात करे तो बीतरागपयाकी स्थिति कोधकी दो मास, मानकी एक मास मायाकी, पन्दर दिन, लोमकी अन्तर सुदुत्ते, गति करे तो देवतावींमें जानें. इ

रना । पुरुषवेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रियोंकि अभिलापा क रना । नपुंसक वेद जिस प्रकृतिके उदय स्त्रि-पुरुष दोनोंवि अभिलाप करना ॥ एवं २० प्रकृति. (५) चायुप्य कर्मिक च्यार प्रवृति है यथा-नरका-युप्य, तीर्यचायुप्य, मशुष्यायुप्य, देवायुप्य । आयुप्यकर्प जेस कारागृहकी श्रुद्व हो इतने दिन रहना पडता है इसी माफीक जीम गतिका आयुप्य हो उसे भोगवना पडता है।

माफाल जाम गावका आजून का उस निर्माण करती है हैं। (६) नामकर्म चित्रकार छुम छोर अछुम दोनों प्रका रक्षे चित्रीका अत्रलोकन करता है इसी भागिक नामकर्मोद्देय बोचोंकों छुमाशुम कार्यम मेरेखा करने त्राला नामकर्म हैं जी मकी एकोरीजी (१०३) प्रकृतियों है।

(क्) गतिनामकर्मिक च्यार प्रकृतियों है नरकगति, त्रीयंच्याति, महुच्याति, देरगति । एक गतिन दुसरी गतिमें गमनागमन करना उमे गतिनामकर्म कहते हैं।

(स) जातिनाम कर्म कि पाच प्रकृति है एकान्द्रय जाति, बेहन्द्रियण तेहोन्द्रयण्चोतिन्द्रियण पौचनिद्रय जाति नाम।

(ग) शरीर नामकमिक पाच प्रकृति ई खाँदारिक शरीर पैक्य॰ व्याहारीक॰ तेनस॰ कारमण शरीर०। प्रति दिन नाश-विनाश होनेवालोंकों शरीर कहते हैं।

(घ) अभोषाग नामकर्मिक तीन प्रकृति है औदारि-क शरीर थम उपांग, बैकिय शरीर अमोपाग, आहारोक प्ररीर अमोपाग, भेप तेजस कारमण शरीरके अमोपाग नहीं होते हैं

(ट) च चन नामकर्मकी पदरा प्रकृति है-शरीरपथे पौद्रल ग्रहन करते हैं फीर उनोंकों शरीरपथे बन्धन करते हैं पथा-स्मीदारीक स्मेदारीकका बन्धन स्मीदारीक क्षेत्रसका रधन, श्रांदारीक कारमाणका बन्धन, श्रोदारीक तेजम कार-माणका बुन्धन, प्रक्रम प्रक्रमका बन्धन, वक्रय तेजसका प्रत्यन, बन्धन प्रक्रमकारमाणका बन्धन विक्रय तेजस कारमणका बन्धन । श्राहारीक श्राहारीकका प्रन्थन श्राहारीक तेजसका रधन श्राहारीक कारमणका बन्धन श्राहारीक तेजस कार मणका प्रत्यन । तेजस तेजसका बन्धन तेजस कारमाणका रधन कारमाण-कारमाणका बन्धन । एव १५ ।

(च) सपातन नाम कमें कि प्रकृति है जो पाहलः श्रीसपण ग्रहन कीया है उनोंकी यथायोग्य अपयव पर्णे मज-रूप नाना। जेमे आदागिक सथातन, बैकयसधातन आहारीक मयातन, तेजस सधातन, कारमाण नवातन।

(छ) महनन नामर्क्साफ छे प्रकृति है श्रासिक ताकत हाहिक मजदुतिकों सहनन नहते है यथा वस ऋषभनाराच महनन। वस्त्रका अर्थ है पाहा ना सम्भान अर्थ है पाहा ना सम्भान अर्थ है पोहा ना सम्भान अर्थ है पोहा ना सम्भान अर्थ है होनो तर्क अर्कट याने कुटीयाके आकार दोनो तर्क हडीका मीलना उसके उपर एक हडीका पट्टा और इन तीनोंमें एक सीली हो। उसे उनस्पम नाराच सहनन कहते हैं। नाराच सहनन-उपर वस्त्र पाचा सीची नहीं। नाराच सहनन-इस्में पट्टा नहीं दें। प्रदे नाराच सहनन-एक तर्क मिट उन्च हो दुसरी तर्क मीली हो। किलीका महनन-दोनो तर्क अकुटाकि माफी एक हडीमें दुमरी हडी कमी हुई हो। छेउट सहनन-आपस में हडीमों जुडी हुई है।

(न) मस्याननामर्रमिक छ प्रकृतियाँ है-श्रीरकी आकृतिकों मस्थान पहते हैं समचतुरम मस्थान-पालटीमार के (पदासन) बेटनेसे चीतर्फ बराबर हा याने दोनों जातके विचम अन्तर है इतना ही दोनो स्रन्थींके विचमें । इतना ही एक वर्षके जानु भ्रोर स्कन्धके भन्तर ही उसे ममचतुरस मस्यान कहते है। निश्रोध परिमडल मन्यान नामीके उपरका माग अच्छा सुद्दर हो और नामीके निचका माग हिन ही। सादि मस्यान-नामीके निचेका तिमाग सुन्दर् हो, नामीके उपरका भाग गुराव हो । कुन्त मस्थान-हाथ पर शिर गर्दन श्यवया श्रन्ता हो परन्तु छाती पेट पीठ रासव हो । वामन मस्यान-हाथ पैरादि छोटे छोटे अनयन गराय हो । हुडक सस्यान-मर्वे शारीर व्याया गाराव व्यवपार्खीक हो ।

(क) वर्णनामकर्मिक पाच प्रकृति ई-श्रीरके जी पुद्रगल लागा है उन पुद्रगलोंका वर्ण जैसे कृष्णवर्ण, निलवर्ण, रक्तवर्थ, पेतवर्थ, श्रेतवर्थ जीवांके निम वर्ग नाम कमीदय

होते है रैमा वर्ण भीलता है।

(ञ) गन्ध नामकर्मिक दो प्रकृति ई--सुर्भिगन्ध नाम कर्मोदयसे सुर्भिगन्धके पुद्गल मीलते हैं दुर्भिगन्धनाम कर्मोदयमे दर्भिगन्धके पुद्गल मीलते हैं।

(ट) रस नामकर्मिक पाँच प्रकृति ई-पूर्ववत श रीरके पुद्गल विकारत, कडुकरम, प्रपायरम, भ्रमलरत, मधुर रस, जैसे रस कर्मों य होता है चेसे ही पुत्रवल शरीरपण प्रदन करते है।

(ठ) स्पर्श नामकर्माके बाठ प्रकृति है जिस स्पर्श कर्मका उदय होता है वेसे स्पर्शके प्रदुगलोंको ग्रहन करते हैं

जैसे कर्कश, मृदुल, गुरु, लघु, शित, उष्ण, स्निम्घ, रुख । (ड) अनुपूति नामकर्मिक च्यार प्रकृतियों है—एक गतिसे मरके जीव दसरी गतिमें जाता हुता विग्रह गति करते समयानुपूर्वि, प्रकृति उदय हैं। जीवकों उत्पत्तिस्थान पर ले जाती है जैसे देचा हुवा बहलकों घणी नाथ गालके लेजावे जीस्का च्यार भेद नरकातुपूर्वि, सीर्यचातपूर्वि, म्यातुपूर्वि, देवत्रातुपूर्वि ।

(ढ) विद्यायगति नामकर्मिक देाप्रकृतियाँ है जिस क्मोंदयसे श्रच्छी गजगामिनी गति होती है उसे शुभ विहायगति कहते हैं और जिन कर्मोदयसे ग्रस्वत गरान गति होती है उसे भग्रुभ विहायगति कहते हैं। इन चौदा प्रकारकि प्रकृतियोंके पिंड प्रकृति कही जाती है अब प्रत्येक प्रकृति कहते हैं।

पराधातनाम-जिस प्रकृतिके उद्यसे कमजोरकों तो न्या परना वह वह सत्तवाले बोडोंको भी एक छीनकमें पराजय

कर देते है।

उद्यासनाम-शरीरिक वाहारिक इवाकी नासीकाद्वारा शरीरके अन्दर सीचना उसे शास कहते हैं और शरीरके ^{अन्दरकी} हवाको बाहार छोडना उसे उथास कहते हैं। श्रातपनाम-इस प्रकृतिके उदयसे स्वयं उप्ण न होनेपर मी इसरोंको भातप मालुम होते है यह प्रकृति ' सूर्य ' के वमानके जो वादर,पृट्यीकाय है उनोंके शरीरके पुद्गल है वह प्रकाण करता है, यद्यपि आप्रिकायके गरीर मी उप्ण है परन्तु वह धातप नाम नहीं किन्त उच्छ स्पर्ण नामका उदय है।

उद्यातनाम-इस प्रकृतिक उट्टयस उप्याताग्हीत-शीतल प्रकृति जेसे चन्द्र गृह नचन वारों के बमानके पृश्वी शरीर है तथा देन थार सुनि नेकिय करते हैं तन उनों हा शिनल शारीर भी प्रकाश करता है। आगीया-मणि-श्रीपवियों इरवादिके भी उद्योत्त नामकर्मका उदय होत है।

अगुरलघुनाम-जीम जीगोंने गरीर न मारी हो कि अपनेसे समाला न जाय, न इलमा हो कि हमामें उड जावे

याने परिमाण सप्रक 🛍 शीवता ने इलन चलनादि हरेक कार्य कर सके उसे अग्रन्तप नाम कहते हैं। जिननाम-जिस प्रकृतिके उदय स जीन तीर्थंकर पर

को प्राप्त कर केवलनान केवलदर्शनादि ऐश्वर्य मयुक्त हो ध-नेक मध्यारमानोंका कल्याल परे।

निर्माणनाम-जिम प्रकृतिके उदय जीनोंके श्रुरीरके श्रगोपाग अपने अपने स्थानपर व्यवस्थित होते ही जेसे सुतार चित्रगार, प्रवर्तायोंके अमोपाम यथा स्थान लगाते हैं हमी मार्पाक यह कमें प्रकृति मी जीतोंके व्यायव स्थास्थान पर

च्यास्यित बना देती है। उपधातनाम-- जिम प्रकृतिके उदय जीवीं की ध्रपने ही श्चापन में तकलीफों उठानी पहें जसे मस नार दो जीमों श्र-

धिक दान्त होतो मे बाहार निकल जाना अगुलीपों अधिक

इत्यादि । इन आठ प्रकृतियोंको प्रत्येक प्रकृति कहते है अब प्रशादि दश प्रकृति कहते है ।

त्रसनाम---जिस प्रकृतिके उदय त्रसपणा याने वेइन्द्रि-यादिपणा मीले उसे त्रसनाम कहते हैं।

गदर नाम—जिस प्रकृति के उदय वादरपणा याने जिसको छदमस्य अपने चरमचसूसे देरा सके यद्यपि नादर एव्योकापादि एकेक जीव के श्रारीर दृष्टिगोचर नहीं होते हे चयपि उनोंके गदर नाम कर्मोदय होनेसे असल्याते जीगोंके श्रारीर एकत्र होनेसे इपना सस्मान स्वाप्त कर्माद्य होनेसे इपरन्तु स्टम नाम कर्मोदयवाले असरयात श्रारीर एकत्र होनेपर भी चरमचस्नुन्वालों के दृष्टिगोचर नहीं होते है

पर्याप्त नाम—जिस जातिमें जिताने पर्याप्ती पाती हो उनेंकों पूरण करे उसे पर्याप्तनाम कहते हैं पुद्गल ब्रहन करनेकि मिक्त पुद्गलोंको परियामानेकि शक्तिकों पर्याप्ति कहते हैं।

प्रत्येक शरीर नाम-एक शरीरका एक ही स्नामि हो श्र्यात् एकेक शरीरमें एकेक जीन हो उसे प्रत्येक नाम कहते हैं। साधारण वनस्पति के विवास सब जीनोंके प्रत्येक शरीर हैं

स्थिर नाम—शारीर के दान्त हडी ग्रीवा व्यादि व्याया स्थिर मजयुत हो उसे स्थिर नाम कर्म कहते हैं

श्चमनाम-नाभी के उपरका शरीरको श्चम कहते है

जेसे इस्तादिका स्पर्श होनेसे अप्रीति नहीं है किन्तु पैरोंका स्पर्श होते ही नाराजी आति है। सुमाग नाम—कीमीपर भी उपकार कियों विगर ही लोगोंके प्रीतीपात्र होना उमको सुमागनाम कर्म कहते हैं।

लागाक प्रातापात्र होना उनका छुनानवान केन करूप र भवादा सीभाग्यपणा सद्व बना रहना युगल मनुष्यदत् सस्वर नाम-अपुरस्वर लोगोंकों प्रीयहो पचमस्वरवद

सुस्वर नाम—मधुरस्वर लोगोंकों प्रीयहो पचमस्वरवर् स्रोदेय नाम—जिनोंका वचन मर्व मान्य हो भादर

सत्कारसे माने ।

यश् की विं नाम—एक देशमें प्रशसा हो उसे कीर्ति कहते हैं और बहुत देशोंमें तारीफ हो उसे यश कहते हैं अयबा दान तय शील पूजा प्रभारनादिसे जो तारीफ होती हैं उसे कीर्ति कहते हैं और शत्रनोंपर निष्य करनेसे यश होता है। अब स्थावरीक दश प्रकृति वसते हैं।

स्थार नाम—जिस प्रकृति के उदय स्थिर रहे याने शुरदी गरमीते बच नहीं मके उसे स्थारर कहते हैं जैसे पुश्च्यादि पाच स्थारपंथे में उत्पन्न होना।

धूरम नाम—िनस प्रकृति के उदय धूरम शारीर-जो कि छुदुमर्स्योंने दृष्टिगोचर होने नहीं कीसीके रोकनेपर रूकान्ट होने नहीं गुदके रोका हुवा पदार्थ रूक नहीसके । वैसे सत्तम प्रष्ट्यादि पाच स्थायस्पर्को उत्पन्न होना ।

अपर्याप्ता नाम-जिस जातिमें जितनि पर्याप पाने उनोंसे कम पर्यापनान्यके मर जाने, अथना पुदुगल ग्रहनमें असमर्थ हो।

साधारण नाम-ज्यनत जीव एक शरीरके स्वामि हो प्रयांद एक ही शारीरमें अनत जीव रहते हो कन्टमुलादि

श्रस्थिर नाम--दान्त हाड कान जीमग्रीवादि शरीरके गायाँ श्रास्थिर हो-चपल हो उसे श्रास्थिर नामकर्म कहते हैं। अशुमनाम-नाभीके नीचेका शरीर पेंग विगेरे जोकि

[मरोंके स्पर्भ करतेही नाराजी श्रावे तथा अन्छा कार्य करनेपर भी नाराजी करे डत्यादि ।

दुर्मागनाम-कीसीके पर उपकार करनेपरमी अप्रीय लेंगे तथा इष्टवस्तुश्लोंका वियोग होना ।

इःस्वरनाम--- जिस प्रकृतिके उदयसे ऊट, गर्दम जेसा खराप स्वर होते हैं उसे दुःस्वरनाम कहते हैं।

अनादेयनाम-जिसका वचन कोइमी न माने याने ^{ब्रादर} करनेयोग्य वचन होनेपर भी कोई व्यादर न करे।

श्रवशःकीर्तिनाम-जिस कर्मोदयसे दुनियोंमें श्रवयश भकीति फैले, याने श्रच्छे कार्य करनेपरमी दुनियाँ उनोंकों मलाइ न देके पुराइयोंही करती रहे इति नामकर्मकी १०३ मकति है।

(৩) गोत्रकर्म-कुमकार जैसे घट बनाते हैं उस्मे उच पदार्थ ^{पृतादि} श्रोर निच पदार्थ मदीरा भी भरे जाते है उसी माफीक

जीव श्रष्ट मदादि करनेमे निय गोत्र तथा श्रमदसे उच गोत्राधि प्राप्त करते है जीसिक दो प्रकृति है उचगोत्र, निग्रगोत्र-निस्में इच्राकुरम हरिवस चाह्रवसादि जिम बुलके अन्दर धर्म और नीतिका रचण कर वीरकालसे प्रमिष्टि प्राप्ति करी हो उच रार्य कर्चव्य करनेवालोंको उच गोत कहते ई थार इन्होंसे विश्रीत हो उसे निचगोत्र कहते हैं।

(=) अन्तरायकर्म जैसे रानाका राजानची-धगर राजा इकमभी कर दीया हो तों भी यह खजानची इनाम देनेमें वि लम्ब करमक्ता है इसी माफीक अन्तराय कमेदिय दानादि का नहीं सक्ते हैं तथा वीर्य-पुरुपार्थ कर नहीं सके जीसिक पांच प्रकृति है (१) दानधतराय-नेसे देनेकि वस्तुना माञ्जद हा दान लेनेवाला उत्तम गुखवान पात्र मीतुद हो. दानके फलॉकी जानता है। परन्तु दान देनेमें उत्साह न यद वह दानांतराय

कर्मका उदय है दातार उदार ही दानकी चीचो मौजुद हो माप याचना करनेमें छशल हो परन्त लाम न हो तथा भनेक प्रकारके ब्या पारादिमें प्रवस्त करनेपरमी लाग न हो उसे लामान्तराय

कहते हैं।

मोगवने योग्य पदार्थ मीजुद है उस पदार्थोंसे वैराग्य मावमी नहीं है न नफरत आति है परन्तु सोगान्तराय फर्मी

दयसे कीसी न कीसी कारणसे मोगव नहीं सके उसे मोगा न्तराय कहते हैं जो वस्तु एक दक्ते भोगमें आति हो असानादि

उपभोगान्तराय-जो स्ति वस्त्र भूषगादि जारवार भोग-. में बारे एसी सामग्री मौजुद हो तथा त्यागवृत्ति भी नही वापि उपभोगमें नहीं ली जाने उसे उपभोगान्तराय कहते हैं। वीयीन्तराय-रोग रहीत शरीर बल्यान सामर्थ्य होने-तिं। इच्छभी कार्य न कर सके अर्थात् वीर्थ अन्तराय कर्मी-रिन पुररार्थ करनेम वीर्य-फोरनेम कायरोंकी माफीक उत्साहा कि होते है उठना बेठना हलना चलना बोलना लिखना िना आदि कार्य करनेमें अमम टर्थ हो वह पुरुपार्थ करनहीं सकते उमे बीर्य अन्तरायकर्म कहते हैं इन आठीं कार्मेकी १५८ मितिको कठव्य कर फीर दुसरे अक्रमे कर्मबन्धनेका तथा कर्म गहने हेत लियोंने उसपर ध्यान दे कर्मजन्यके कारणोंकी शैंडनेका प्रयत्न कर पुरांग्रे कर्मोको जय कर मोचपद प्राप्त

सेवमते सेवंभते तमेवसचम्

करना चाहिये इति

प्रय त्रागमो का सिन्तिप्त विवरगा

17 *1

17

--->:\:(\@):\---इग्यारा अगसूत्रों कि मूची

(१) श्री व्याचारामजी सूत्र धृत स्मन्ध २ श्रध्ययन ! उदेशा = ४ जिस्मे धुनियों का श्राचार विचार विनय व्या भाषा एपणा वस्त्रपात्र मकानादि प्रदनतथा छेकाया जीवीं

प्ररूपणा और भगवान् वीर प्रश्वका उत्त्रल जीवन है (२) श्री ययगडायागची सत्र श्रुत० २ प्रध्य० उदेशा २३ जिस्में स्तमत परमत कि प्ररूपणा मीचम उत्कष्ट मुनिमार्ग, श्रिससर्गत्याग, नरकदु रा, वीरप्रमुकि स

च्यार ममासरख इत्यादि निस्तार है।

(३) श्री ठाणायागजी सूत्र ठाणा १० उद्देशा २१ वालसे दश वोलोंका मब्रह है जिस्मे च्यारों श्र<u>नुयोग</u>के श्रन्दर निचेप गर्भीत विविध विषयकी ३२०० चोमगीयोंका निरूपर

(४) श्री समवायागजी सूत्र-जिनमें एक भी कोडाकोड बोलॉका मग्रह है इसमें भी नय निरोप अवेदा ह द्वाद-अनेकान्त मतका प्रदर्शन और तीर्थंकर चन्नवर्ती बल वासदेव भूत मविष्य तथा उनोंके मातापिता दीचा

श्चादि विविध निषयका श्रच्छा खुलासा है। (४) श्रीमगवतीनी सूत्र मृल शतक ४१ व

(२१) क्ष विद्मी १६ उदेशा १६२५ जिस्से गुरु गांतमस्याः विकृष्णे हुवे ३६००० प्रश्नीका उत्तर तथा अन्य महात्मा-

हैं य बन्य तीथीयोंके प्रश्नोंका वडाही असरकारी उत्तर मीत् चार्रो श्रनुपीनोंका एक प्रडामारी सजाना है ।

(६) थी झानाधर्मकथा सूत्र श्रुत०२ ग्रध्ययन १६ गा २०६ जिस्से पहले अतस्कघर्म मेघकुमाराहि १६ न्यायके क्षान दे के उनोंकि उपनय मुनियापर उनारके माधु साध्नी-गोंतों हिताशिचा दी गह है दुसरे स्कन्घमें पार्श्वनाथ प्रशुक्ते शामन

हि २०६ साध्ययोका शीथिलाचार-सरल् स्वमाय-एकावतारी होना या द्रोपदि महामतीकि , ७ प्रकारिक पूजा वतलाइ है। (७) श्री उपाणक दशाग सत्र अध्ययन १० जिस्मे

मानन्दादि दश आवर्कों कि ऋदि वत ग्रहन गासन सेवा चैत्योपासना परिसद महुन प्रतिमा प्रतिपालन स्त्रगीमन एकानतारीपणा बतलाया है.

(=) वी अतगढ दशागस्त्र मंगि अध्य०६० जिस्में गाँतमकुँमारादि दीचा ग्रहन कर घोर तपश्चर्या कर धन्त समय श्री शानुजय वेशारीगरि ख्रादि तीर्थोपर धनसन

कर केनलज्ञान प्राप्त कर मोच गर्ये उनोंके उज्नल चरित्र हैं श्चर्जनमाली देवकीमाताके हे पुत्र श्रीकृष्ण तथा प्राठ अग्रमिहिपीयों द्वारकाद्दन श्रीकृष्ण मंत्रिष्यमें

होगा इत्यादि रसीक सवन्ध है.

ौ. १ औ अनुत्तरोवइमा सन-मर्ग ३ अध्य० ३३

महोएएस इड्ड कुर्म भाक्ष नाम किसीहाउ-१डाए उपालिए क्रिक्ट के किस्ट क्यां क्ष्म क्रिक्ट की क्ष्म क्षित-प्रमी अप-पास क्ष्म क्ष्म

दुस्याहे यह सुत्र वर्षातक है. इस्याहे यह सुत्र वर्षातक है.

पीराजा वया स्रीकानसायी, निवायात, की केमीअसयाप्त के मानापी किया चर्चा स्रीकानसायी राजाजा करवाण, याने प्रतिया हैन कोच प्रवेशकों अदेशी राजाजा करवाण्य काला पुत्रा मोन होना की विजयासीमा कि एक प्रकार स्थाय काला है। के काला ना नारकों प्रश्नाक के स्थादि

(३) औ जीगरियमची स्त्र प्रकृषि हो (३) के जीगरियमची स्त्र प्रकृष पद्दार-देन्द्रेयमे तीग्रेग्ट्रों का वर्षने वस्त्राप्त हिम्पद्द्र का वर्षन स्त्र गदरितिगोद का वर्षने विवयद्द्र प्रतिमाध्य वर्षा राजधारि उत्पादि

(४) की प्राचनम्बानी सुन वह है दिस्सें, जीवाजीकके स्थान, प्राचनस्थान, हिस्सी, प्रेन, उत्पाच, चनन, शासीखास, सन्धा, योति, चमीच्ये, भाषा, योति, प्राध्ययम, कपाप, इत्रिस्प, प्राचा, योति, चमीच्ये, भाषा, यासीस्थान, अल्लोक्या, यासीसमाहान, प्राचा, वेर्या, दक्षि, कायिस्थान, सन्धा, सम्बो, सम्बोन स्था, समुद्र्यान, इंसादि द्रल्याच्योगका खनाता है, जिस्मे २२ ग्रुनियोंकी दोंक्षा उम्र तपश्यो जिस्में भी धलाग्रीन कि तपश्यो श्रीर उनोंके शरीरका विशेष वर्धन वडाडी श्रश्ना-र्यकारी है सर्व श्रञ्जतर वैमानोंके शुर्खोंका श्रञ्जभव कर मनुष्य हो मोच जावेगे

(१०) औ प्रभव्याकारण यन शु० २ भव्य० १० जिस्से पांच व्याधव हारमें जीव हिस्या करना, भूठ गोलना, चौरी करना, मेशुन सेवना, परिग्रह कि प्रमच्च वढाना इसका फल तरकमें जाना खनेक जन्म मरणादि समारमें परिश्रमा करना और अहिंता सरक प्रदच मद्राचर्य ष्यममच्च वह पांच सबरहारके फल यावत् मोच—व्याकरणादि एउके द्वर वाचना प्रकार्य कि ३२ खोषमा इत्यादि।

(११) औ विषाकदार—तुतस्कत्भ २ अध्य० २० जिसमे मृगादि दश् अतिर्गिते पूर्वभविक दुष्कर्म-पापाचरवाँ के फल दु खोंका अनुभव और सुवाहुकुँमरिद दश जीपोंकें पूर्व भवीं युरमाचरवा दोनसहारूयका सविस्तार वर्षण है इन एक के अभव करनेसे ससार दशाका ठीक अनुभव हो सप्ता है।

बारहा उपाग सुत्रोकि सुची

(१) श्री उनवाहजी धन-जिस्में चम्पानगरी के वर्धनमें षडे षडे श्राकारवाजे सिखरवन्य जिनमन्दिरों से शुरोभित-नगरी है तथा पूर्धमद्रोद्यान पूर्णबद्र यचका ग्रन्दिर आशोकश्चर पृथ्वी (५) श्री जस्युद्धिष पद्मति छन्-जिस्मे तीर्यंकर चक्र-न्तं, हे झारा, जस्युद्धिषमें मरतादि चेन, चुलहेमवन्तादि पर्नेत गगादि नदी, दुक विजय तीर्थे श्रेखि श्रादि दग द्वारींसे जस्युद्धिपका पर्धन हैं श्रीर ज्योतीर्पायोंका सचेपसे वर्धन हैं।

(६) श्री चन्द्रपशित खर पाष्ट्रहा २० जिम्मे चन्द्र स्पै गृह नचर तारीका वर्धन है ज्यातिपीयों के महला चाली कुला उपकुला नचर नचरों के तारा-सस्यान नचरों के देव अलग अलग नचरीका मोजन कार्यकि मिद्धि इत्यादिः

(७) श्री सर्यपन्नति यत पाहुटा २० जिस्से सर्प, सर्पे के मडले चाली नचन गृह-द्युमाद्यम नचनों के देवता उनों के मोजन जिनोंसे कार्य की सिद्धि चर्यात अग्रुक नचन के दिन अग्रुक स्थान करनेसे अग्रुक कार्य कि सिद्धि होती है इसमा निर्माण वर्णन है। ज्योतिपीयों का वर्णन सदि-स्तार है।

(c) श्री निरियानिका धन श्रध्य॰ १० जिसमें श्रेणिक राजा के काली स्मादि दश हैं मरों के श्रन्तरगत कोखक राजा पहल हूँ मर के हार हाथी का विवादमें चेटक राजा श्रीर कोखक राजा का वढा भारी सम्राम का वर्षन हैं

(६) श्री कप्पवदासिया द्वन्न ष्यप्य १० जिस्से कालि स्रादि दरा भाव्यों के पमादि दरा पुत्रोंने दीवा ग्रहन कर दर्गगमन कियों का वर्धन है (१०) श्री पुष्फयाजी खत्र श्रव्य० १० जिस्मे चन्द्र सूर्य शुक्रादि दश देव देवी सग्रानको वन्दन करनेको श्राय ३२ प्रकारका नाटक किया सोमल ब्रह्मखके प्रश्नादि जिनोंके पूर्व यनका वर्णन एकावतारी यावत् मोचमें वार्वेगे।

(११) श्री पुष्फचृत्तिया सूत्र अध्यः १० जिस्मे श्री-देवी खाढि १० देवीयों मगवानकों उन्दन करनेकों आह ३२ प्रकारका नाटक मक्ति करी जिनोंका पूर्व भवका वर्णन है।

(१२) श्री जिन्हीद्या खत्र अध्य० १२ जिस्में द्वारा-मति नगरी श्रीकृष्ण नरेश-चलदेजराजा-चारणी राणीके निपढादि १० राजकुँमरीकी दीचा वर्णन है.

दश पयन्ना सूत्रों कि सूची

(१) चडक्रण पयना (२) मधार पयना (३) अन्त

पयन्ना (४) आउरपचस्काख पयन्ना (४) महापचस्काख पयना इन पाचाँ पयन्ना छन्नोमें आलोचना जविष्ठादि मात्तपायीका त्याग अन्त समय अत्याख्यान मायनाविद्यादि, कपाय गीतलता जात्ममावना अनित्यमात्रना अमरखमावना आराधिकमान्ना एकत्रापणा कि मावना इत्यादि वर्णन है

(६) ज्योतिष कराड पयन्ना (७) गणी विभिन्न पयना इन दोष पयन्नोंमें ज्योतिपीयोंकि विपयका सविस्तार वर्णन है। श्रावनीके आवस्य करने योग्य श्रतिक्रमण सूत्र है. इनोंसे सवन्ध रखनेताले अन्य निषय भी बहुत है।

(२) श्री उत्तराध्ययन सूत्र श्रध्य^{, ३६} जिस्मे निविध विषय बराग्यमय तथा ब्रह्मचर्य कि नी बाद मोचमार्ग अप्टप-वयन साधु समाचारी कविल्लानि इरक्जीमुनि नयति-सृगा पुत्र अनाधी ममुद्रपालादि और भी उद्यक्तीटीका मुनि

मार्ग पटहरूम, नयतस्त्र कर्मलञ्या जीवादिका प्रतिपादन

अच्छा कीया है। (३) थी दर्शवैकालिक सूत्र अध्य १ निस्में सुनि

योंके आचार व्यवहार तथा मिचाइति आदिका वर्णन है। (४) श्री बोधनियुक्ति स्त-जिस्म तिरिध नियम 🕏 मनियोंकों पाने कीतने प्रमाखवाले दहा - चदर चोलपटा उत्तरपटा आदि मबका प्रमाग है तथा आहार निहार आदिका

विस्तारमे पर्णन है। एव ११-१२-१०-६-४ मीलके ४३ (४४) श्री नन्दीनी बन जिस्में पाचनानका सनि स्तार पर्धन है अववानधिकार द्वादशोगीय से के ७३ आगम

और प्रकराणदिका मविस्तार पर्णन कीया है। (४५) श्री अनुवागद्वार युन जिस्में नव निश्चेष द्रव्य

प्रभाण सामान्य निशाय अलुपूर्वी अनानुपूर्वी पच्छालपूर्वी के भाव मात स्वर-तीन श्राम इकतीन मुच्छेना छे दोष श्राठ गुण याने मगीत रिपयका अन्छा विवरण कीया है

इन पैतालीस श्रागमींपर पूर्वाचारोंने बढेरी विस्तारसे निर्मिक्त टीका चुरणी भाष्य वृति अपचुरी छाया टीपण और वालवरोध रचके जन समानरर वडा भारी उपकार कीया है तिशेष जैनागमोंमें निर्तीवर्म, गृहस्थधर्म, सदाचार, व्यवहार-शुद्धि, ७२ कलानों, १४ रत्न, च्यार मानना, अहिंस्यादि धर्मके माय सम्यकत्वधारी राजा महाराजा सेठ सेना पतियों ने जिनमन्दिर-तीथांका निर्णोद्धार-जिनप्रतिमा पूजा शासन प्रभावना शासनोद्यति करी जिस्का वर्णन र्जन श्रापक लोगोंने मन्दिर प्रनाया प्रश्च पूजा प्रभावना यिक प्रतिक्रमण पापद प्रतिमा धारण करी का वर्णन " प्रनियों तप समम ज्ञान ध्यानमे आत्मकल्याण कीय वर्णन है निशेष पुलामा तनहीं हो सके कि गीता व्यपने शिष्योंकों व्यागमीं कि वाचना दे तथा श्रापक वार्थ गुरु महाराजों कि सेना मिक कर खुन सुने जो जन्म घारण कर जैन मिन्हान्तीका आयोपान्त अवण कीया है यह मानों अपना अमृत्य मनुष्य जन्मकों नि ही खोके चला गया है " सुबरवणस्म दलहा " आ। कहा है कि स्तरत्न मीलना दुर्लम है सोचा जगड कलागा. सोचा जगड पाउप ।

सोचा नगर कलाण, सोचा जणह पात्रय । उभयपि जणह सोचा, ज मय न समाचरे ॥ १ ॥ सेवभते सेवंभते तमेवसद्यम्'।

🕺 खुश खबर. 🖔

पुरे) इव्यानुयोग दिनिय प्रयोगस्य वि 🔑 १०० १४ नाम

मार्ग क १०) ४०० नकलाका क ४५) १००० नकलाक ह =) श्रद्धा देवान्युलिका तथा वग्यनिया (क <) १० ना (धार १०)

योंके आचापकरण तथा स्तवन सग्रह भाग ४ वा गेर

(ध्रा द्यांका दिन्दी भाषान्तरः र ४) म्रुनियोंको (योध माग १२ पुस्तकोंकि र ३)

दी मेमजनामा क शा पत्ता-श्री जैन युनक मित्रमङ्ळ स्तार नर

मु सोशाय-(मारवाट) २ श्री रत्नप्रभाकर ज्ञानगुष्पमाला

म॰ फगोधी-(मारवाद)





श्रीमद् युद्धिसागरसूरि प्रथमाळा बन्धाक ८७.

જૈન ધાર્મિક શંકાસમાધાન.

-ચયિતા, શાસ્ત્રવિશાહ યાગનિષ્ઠ જૈનાચાર્ય શ્રીમદ્ ભુદ્ધિસાગરજ મૃરિજી.

શા કેશવવાલ સિવનાલ ભગલાગ ત્રાતીજવાળાની દ્રવ્ય સહાયથી છેપાની પ્રસિદ્ધ ન્યનાર શ્રી અધ્યાસિજ્ઞાનિપ્રસાગ્ક મે ડળ.

હા. નકીલ માહનવાવ હામચદ તુ. પાદના

પ્રથમા√તિ *_# પ્રતિ **૨૦૦૦** ત્રિસ ૨૪૫૦ કિંગ ૧૯૮૧

કિ, c–ર~c

થી " કાયમક જ્યાનિસ " મિન્ટિંગ પ્રેમમા

અયકાનાદ.

परीभ विश्वास धमननाते छाध्य

નિવેદન

શ્રી અત્યાતમતાન પ્રમાગક ૧૧૦૦ તરફથી પ્રકાર થતી શ્રીમ-બુદ્ધિમાગ સરિપ્રથમાળાના સંચાક ૮૦૦ તરી³ શ્રી જેતનમે સકા મમાધાન નામના શ્રેષ્ઠ પ્રશ્ટ કરતા અમેતિ ઘણા આતક થાય છે શ્રી શામનદેવ ઘટાકણુ વીરના અન્યધ્યાસ ૧૮૦૦ની માલમા કેટતા છતાસુએા તરફથી શાખ્યોભારી વર્ષો ચેતી અણી અને તેવાઓને મય ઢપીકત લુપ્યોગી શર્ષ પર એવા ટેનુલી નાગ્યીએ આ ગ્રથ સખી મમાજને આ નિયાનું ઉપયોગી સાદિત્ય પૂર્વાક્ષ્યુ છે

ન્યા મડળ પાને કૈક પ્રિયગનું ગ્યાપીક તથી. ત્યાં પણ અક્ષ મડળતા ન્યવિતના પ્રાત સ્મરાં વિ ાઢમલાગજ તીન ત્રુહિમાગરજી સરિજીતી પૂર્ણ કૃષાથી અને ત્રાનકથી જૈતનુર્વ ત્રેયું સ્મેતાની ઉંદર સહાયથી મડળ પોતાના ચાતુ નિયમ પ્રમાણે ઉત્તરોત્તામ પ્રત્યો સમ્તો કંપની તમિલ કરે જાય છે મડળતા આ તુન બયમાં જેમ જેમ ન્યાયક સ્થાય મળગે તેમ તેમ મડળ પોતાનું કમ વધુ ઉસાહથી સનાવશે ન્યાના પ્રધરના સહિત્યની અપણામાં થણી ઓહપ છે તે આશા છે કે ન્યા પ્રયસ્તા સહિત્યની અપણામાં વહે અન્યાત્માઓ પોતાના ન્યારમ ત્યાથે સાથે મત્ય વસ્તુની પ્રતીતિ કરી તકેશે એકી આગારાખવામાં આવે છે

મુ પાદરા, ૧/૮૧ } અધ્યાત્મમાન પ્રચારમ અડળ તરફથી, વમતપરાધો કે વકીલ માહનલાલ હીંમચદ્દ.

ધન્યવાદ.

તમતાને ક હતો ની આર્થિકમાત્ર ના દી પોતાના દતના સ.પંતાય

કરેલ છે. ત્યા ભાગે થી અત્યામ જ્ઞાનપ્રસાન્ક મહળ તરફથી તેમના ધ મવા

રાક નાય છતાવવામાં ધાનીજવાળા કેઠ કેશવતાન શિલમામ

માનવાની સાથે આખાર ખાનવામાં આવે છે

—અ લા_ક પ્રત્માળ

મસ્તાવના,

વિ સ ૧૫૮૦ માં જે જે લાે છે જનધર્મશાસાના મતા સ ન 1/4 વિચારા દશા યા હતા તેઓના શક્તિ વિચારાની અમરધી અ ય જૈતા મકત રહે એવા ઉદેશથી જૈતધાર્મિક તકાસગાધાત શ્ર થ પેયાકરમા તેજ ગ્રામામામાં શ્રાપ્ય માસમાં લખી પૂર્ણ કો! આ ગયમાં જે કઇ ઉત્તર તરીકે લખ્ય છે તે જનશાસ્ત્રાના વ્યાવારે લખના છતા ઇદ્રાસ્થ દશાધી અનુપયાર્ગ જિનાદા નિરદ્ધ જે કઈ લખાયુ ટાય તેની સ તમમકા મારી માશું છું અને તેને સુપારવા જનગીનાર્ધોને વિનયપૂર્વ- પ્રાર્થના કર્યું હાયમાં અને ધ્યમામાં અકાન્તિયુગ પ્રવત છે. દેશ સમાજ વગેરેમાં આચારા વિચારા સળધી સકાન્તિત્રુગ ચારે છે. અધ્યિર પ્રતાવાળા તથા અ'પદામન' યોને ગીનાર્થદ્યાનીઓના સમાગમના અમાવે तेभव वर्ष नशास्त्राना अभ्यासना अनावे अने व्यवतो शर्मा पर क्रिमा વ્યાક્ષય નથી તેથો તૈનાઓને ગ્રંથકપે પ્રત્યત્તર આપના વ્યાય જેના કે જે મલગ્રાહી છે તેઓને આવા ત્ર યાયી સમક્તિની નિમનના રહે એવુ જાર્શીને મે માર્ગ કર્જ બજાની છે અને તેથી પ્રતિપક્ષી વિચાર વાળાઓને તે ન ફચે અને તે બારી નિદા કરે તાપણ મને તા તેઓપર સમભાન બાવ યા દાવાથી કમની નિર્જગયન આ મનુદ્ધિ થયાની છે અને બવિષ્યમાં પણ ગતે સાસુધી પુત્ર શાળાઓના જવાગ તગીર જનધર્મ અને જૈનમ તની નિષ્ધમનાને મેતા કરતાની નિષ્યમ પ્રદૃત્તિ ચાતુ રહેવાનીજ -આના સક્ષાન્તિયુગમાં મારી કરજ માટે ભવ્યત્તી જો છે. તેમા પ્રતિપક્ષી નિદમ તરફથી ઉપયગથાય તાપણ મારે તેઓની નિદા કર્યા વિના તેઓ ું ભૂર ધ્રવાની વિચાર પ્રકૃત્તિ નિના મારૂ મર્ચ કરવાનુજ રવું પ્રતિપથી નિદેશપર મને આત્રયા અને સમબાવ વર્ને હે તેશ

ŧ મ્યાત્રા કર્મ રાગીઓના કારોથી *આત્માની શક્કિ* થાય છે. પેથાપુરત! જૈનસ રે ચામાસામા ગુરુમકિલ સારી કરી હતી શા ગાતિનામ પાનાય દ

તથા શા રમસિકનાન કળામામભે યુક્ માનવામા સહાય કરી છે આ મ થથી જેતો જૈનધર્મમાં અહાવાન રહેા એમ ઈચ્છુ છું પ્રતિપ્રા નિ મારે નું ખગાવ છુ અને તેઓનું ભત ઈચ્છ છુ તેઓપર દેવ વિના

वैभापर शुद्ध प्रेमथी भनीतान धाइ ध्रु भन भाशा छे है तेमा भार લખેત સમજીતે તેમાંથી સહાયરાળ કરે અમર વચ્ચાવ તજી મધ્યત્ર્ય ભતે અને અપમગૃહિ કરે

વ્યા એ થતુ અશુદ્ધિ શુદ્ધિપત્રક કરતાની ઉપરોધિતા જણાઇ નથી હતા જે કહ રાર્ગય વગેરે અલગ શાન્દદેશ રહી મના દ્વાપ તેઓને

સતા સધારગ

इस्वेचं अ अर्ह महाबीर शास्ति इसु भुति वि०१४८९ भेग पि ए

શ્રી અધ્યાત્મજ્ઞાનપ્રસારક મંડળ તરફથી શ્રીમદ્ છુદ્ધિમાગત્સરિજીશ્રન્થમાળામા પ્રગઢ થયેલા શ્રન્થા

	મે યાંક	પ્રદુષ	કિં મત.
	૧ૂક ભજન સગ્રહ ભા	ય ૧ લે! ૨૦૦	ه
	૧ અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમા	\$ OF	0
ß	ર ભજનસગ્રહ ભાગ ર	को उपा	0-6-0
ķ.	૩ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૩	ले -१५	0
ř	૪ સમાધિશતકમ્	ક ૧૨	0-4-0
	૫ અનુભવપચ્ચિતી	२४८	·
	₹ ≈માત્મપ્રદીપ	395	·
	🖪 ભજનમગ્રદ ભાગ ૪	થા ૩૦૪	0-4-0
	૮_પગ્માત્મત્ર્ર્ગન,	800	∘—1 २ -∘
ķ	૯ પરમાત્મજ્યાતિ	You	o92-0
~	१० तत्त्वभिंदु	પૃઠ૦	o-2>-0
•	૧૧ રાણાનુરામ (આકૃત્તિ	ખીછ) ૨૪	·-1-•
'n	१२-१३ अक्नम अ५ ला	ગ ૫ મા	
	તથા ગાનદીપન	1%0	o-t-0
,	૧૪ તીર્થ યાત્રાનું વિમાન (ગ	યા બીજી) ક્ષ્ય	o>o
	14 અધ્યાત્મભજનમ ગ્રહ	ገ ૯•	0-1-0
	૧૬ શુરૂએાધ	१७ ४	·
ፉ		૧૨૪	o-{-•
	૧૮ ગદ્દલીમગ્રહ ભા ૧	૧૧૨	o3o

	૧૫ - ૨૦ ગ્રાવમ્ તર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧	~2	
	(આફોર્સ ત્રીજી)	-	¥0-¥0
	ર૧ ભજનપ મથક ભાગ ક ટે! ૨૨ વચનામૃત	२०८	0-12-0
	√ર યવનાસન ∽3 યાત્રદાપક	630	0
	र केन अनिडासिङ रासभाणा	306	o98
,	રેમ આને દેધનેય ભાનાર્થ	805	?- 0-0
	(20C) HUE	٥٠٧	₹•
	ર જાપ્યાત્મશાતિ (આ બીછ)	૧૩૨	0-3-0
**	२७ हान्यम बंद भाग ७ मे। २८ कैनधर्मनी धायीन अने अ	ในง ชโลก	·
	१२वान २४ ३४१२५१० (दिन)	41	ه د ه
	30 40 8-08 States 312 30-00	*20	0
,	૦૧ ૧૬૪-લાનચાર	२४०	0—X—0
•	• વિભપુર ક્લાલ	k.a	0X0
	-७ भागरभतीभ _{न्य} ३८ प्रतिज्ञापानन	145	0-1-0
*	~<-४०-४१ कुनगन्कग्रयप्रम् ध	11	0
	० के जगावन्य		

308

84

४८

સઘતત્રનિ જૈનગીના

૪૨ જૈનધાતુ-નિમા લેખમગ્રહ ૪૩ મિતમૈતી ૪૪ શિધ્યાપનિષદ

४५ कैने।भनित

	-	
ধ্য-৮৩ ধার্মিঃ স্বস্থত (12:1	
સદુપે વાગ ૧ લે	 દ ક	
४८ लजनसञ्चल ला ८	601	3-0-0
૪૯ થીમદ્દેનચદ્ર ભા ૧	१०२८	2-00
પ∘ કમ [′] યાગ	૧૦૧૨	3-0-0
૫૧ આત્મતત્ત્વન્શુન	992	0-200
પર ભારતસહકારશિક્ષણ કાઝ	। ११८	0-90-0
પા કશીમદ્દેવચાર ભાર	9200	3
પષ્ટ ગાંુલી મગદ ભા 🤉	930	°
५५ <i>७</i> म प्रकृतिगक्षालायान	600	3-0-0
પદ ત્રુ∍ગીત હાઢવીસ ગ્રહ પછ–પ૮ આગમસા> અો	१६०	0-10
અધ્યાત્મગીતા	2000	
पक्ष देवन इन अनुति अतनन औ	003 1009	ه ۶ ه
૧૦ પૂળસંગ્રહભા ૧ ક્ષે		0
११ लक्निप्रसंबद्ध ला क	¥15	1-0-0
૬૨ લજન૫ ૦મંગ્રહ ભા ૧૦	420	1
૧૩ પત્રસદપટેશ જા 🤉	200	1-0-0
รัช รีเตรเลินเวิน มหม 👊	YOF	1-4-0
I'M WHENEY HENDING	ie (co	\$0-0
ભાવાય (વવસન	** ~{o	
११ पृत्रसंभट व्या १-३	,	1-0-0
६७ स्तानपूज (शृद्धिसामञ्जूति	td)	4
દુ ત્યામ દુ દ્વસ હજી અને સ્થાન	• /	-
छ वनथरित्र	35	a

10 १६-७२ शहीपरीय विक संस्कृत अथ ४ of hopes & 60-60 160 भेग्न भथ ५ ७८ सा नातग्रपनश्य व्यो क्लिस्म १०० ७ भिन्ताभि ८०-८१ कलध्य अरे म्यान्नियमंत्रा समाधना तथा कॅल मीस्नि संचा० १२० ८६ सत्मस्यवप ८३ ध्याननियार 1-0---200 ८४ न्यात्मशक्तिभगस •-t--. SPYLYSIS YS 1 --- ----140 લ આસ્ત્રહીન ye ૮७ જૈન ધાર્મિક સમાધાન 144 ८८ = याविक्ष्यानि (ध yy ૮૯ ન્યાત્મનિશ્વાભાનનામુખશ 250 ६० व्यात्मधास ·--100 66 Mildutter (Townell) 0-8-0 ६२ तस्विभाग es withlish list ६४ व्यात्मसमाधिशनः ६५ ६ १ मे मे मे १४ < । भारभभ्यत्थु મુજ્ય મુદ્દા क्षेत्रभाभाग ૯૮ જેનસનમા યુનિદ્દળ

શાહા માસમા અહાર પડનાર શ્રન્થા.

ર જેન શ્વેતાભર ગ્રાથનામાવિ

ર શામદ દેનચંદ્રજી નિવાણ રામ

૨ મીમદ્દ દેનચંદ્રજી નિવાશ રા ૩ માટ્ટ નિજપુર વૃત્તાત

४ ७० श्री यशाविक्यक निमा

પ ભજનમંત્રહ લા ૧૧ મા

ઋા નિશાનીનાળા અચા ત્રીનક નથી

પુસ્તકા મળવાના કેકાલા — ૧ વકીલ શા સાહનલાલ હીમચ દ પાદના (ગુજરાત)

ર શા આત્મારામ ખેમચ દ સાબ દ (છલ્લે અમદાવાદ)

ર સા વ્યાત્મણમ ખમવદ સાબુદ (છશ અમાવાદ) 3 ભાખગિયા શા માહનલાલનગીનદાસ ૧૯૨-૯૪,

ખજરત્રેટ કેટ—મુબઇ. ૪ રાક નગીનદાસ નયચદ ભાખરીઆ મહેસાણા,

પ શેક ચદુલાલ ગાકળદાસ, નિજાપુર જૈનતાનમ નિર

૬ ભુકસેલર મેઘછ હીન્છ પાયધુની—મુખા. ૭ શા. રતિવાલ કેશનલાલ, મુ. પ્રાતીજ.

છ શા. રાતવાવ કચવસાવ, મુ. પ્રાતાજ. ૮ શ્રીમદ્ર છુદ્ધિસાગરમરિ મડળ, મુ. પેથાપુર

માગગ્ગ≁૭ ઉપાશ્રય



જૈનધર્મ શંકા સમાધાન.

શ્રી જૈનશાસનદેવ ઘંટાકર્ણું વીરની સહાયસિદ્ધિ ચ્ઝાદિ માન્યતા.

प्रणस्य धोमहायोर, सर्वश दोपवाजनम्
हुमस सण्डल हुर्थे, त्रत्यश्यास्तिरोधिनाय-॥ १ ॥
सण्डलणंभ्रद्याधोरी जेनधासनरश्च । १ ॥
सण्डलणंभ्रद्याधोरी जेनधासनरश्च । १ ॥
श्री भनत होप्यस्तियर्थं, विन्य शास्त्रानुसारतः ॥ २ ॥
श्री भनत होप्यस्ति भौतीश्चरा तिष्ठर तार्थुवर स्रेना महानीश्चरी ने नेस्त्रा स्वाति । १ ॥
हेवेती भहापताने भानता नथी वगेरे लेनशन्य विवह स्तेन भुभनने
धारे स्रे स्रेवाना भूभनन् भान इन् छु ध्या ध्री भहापीर स्ते ते ते त्रिप्यभा
तोर पेण स्त्रा वीर है लेनशन्य रक्षक्षीर स्ते ते लेनध्यभा
स्त्रानु स्त्रा हैगोने सहाप स्त्री श्रेष्ठ स्त्रासन्तिनेन सहापनी
सिद्धि सालवाहर स्त्र छ्व

જૈતશાસામા પરપરાગતનુ વધાન છે પૂત જૈતનાચાર્યોની પરપ ાસ્ત્ર જે માનવતાઓ પત્રત છે તેના પરપતાગળના સમાવેશ સાય છે મવ ગતના હિંદુ સુસવમાન, છોહ વગેર ધર્મીયા પહે તેઓ તેઓના માત્ર ભાગોના પરપરાગમાને માતે છે જૈતશાસીના પરપરાગમ છે તેને જે ન માતવામાં આવે તો જૈતધર્મની ઘધ્યું ગાન્યતાઓના નાદ્ય ઘર્ઇ જાય પૂર્વાચાર્યોએ અતપ્રવાદપૂત્રમાથી અતેદ્રબનોના અતે વિદ્યા એતો હતાર કરી મત્રક પકાયે ની રચના કરી છે જ મત્યા માં વિદ્યાપતા પૂત્રના ત્રજ્યાનીઓનું પૂર્વ ચાંદોએ વ્યક્તિ દેવોના મત્રીને મના ત્યા છે ખંતે તેથી તેમાંનું વ્યક્તિ મત્ર થે રચ્યા છે. તારમાં હૈતનમાં મોમા નવપર મત્રકાર અને પ્રાપ્તના કોંગ્લું છે. ઉત્તમગ્રાદ મત્રી મ પણ કપ તાને તોલ્યું છે નાતી ઘાનીએ પત્ર પ પણ કોંગ્લું છે. તારી શાંતિને મત્ર પ છે. મનિકરીને મત્ર ૧ છે. નિજયપદુત ભીતિ કું ખંતે છત્તાનામાંની મત્ર યત્ર પ પ્રાપ્તું છે. જૈતાવર અનિ મત્રની આર્રાપતા કરે છે. આવે સરિમત્ય પત્રને પૂરે છે. લીપાયો સ્વ પત્રમાનિત્વાની આરંપના કરે છે. આવેલ સરિમત્ય સ્વાનો કરે છે.

[ે] ખીરા પ શાળું લ્લ્ય —પારણના તીળ ન ભરતા લહાયાં II કોલીવાલાની આવી શેરીનો લહાર સા હાલાલામી કેમ્યું જ્યારે છે તેમાં તથા પુત્રીકેના શેરિક્યા હિંદી તો તત્ત્વ બન્ન પાર્ટ આ ૧૬ પ્રમાશક્યના શિલ્લા નિલ્લુ પરમ-પરલ્ પ્રાથમિતા લખેલ ત્રેસા પરલા છે તમાર્ચ-જ્યા દરેક પ્રતિકાર્યા હડાકનું લગ્ન સ્થાપનામાં આ રે

અને પ્રતિળ મત્રમ્યમાં ઘટામ્પ્યુંનીરની મત યત્રવાળી થાવી અને તેને સખડી ધરાવવાની નિધિની પ્રક્રિયા આજસુધી તપાગચ્છ જૈતેનામાં પ્રવર્ત છે. અમારા પૂર્વાચાર્યોએ, મુનિત્તાએ, પ્રનિગબ્ધ્યમા ઘટાકર્ણવીરની સહા યતા~માન્યનાને સ્નીધરેલી છે, તેથી અમા પણ વ્યમારા પૂર્વાચાયોના પરપરાગમને માય કરીને ઘટાકર્ણુંવીરને શામનદેવવીર તરીરું માની ત્રે છીએ અને મુદ્રીના મધે ઘટામ્થુંવીરની મૃતિ બનાની અને અમોએ તેની પ્રતિગ છી છે જૈનસાસ્ત્રોમાં જૈનોના તોળ મરખરના મંત્રા છે તે મત્રપના નામના પૂર્વમાંથી ૬.ધત કરેન છે અને તેઓના નિગમ રાત્રામા સમાવેશ થાય છે. અનાદિતાનથી દરેગ્ લીર્થકરના વખનમા માધુએના આચારના અને તત્ત્વતાનમય ન્યામમ શક્યા અને સદ્ગ પૂર્વના મતાદિ ભાગના તથા ગૃહુસ્થ ધર્મના અરકાર વ્યાદિ ધર્મપ્રગ્પનારા નિ ગમશાન્ત્રા પ્રવર્ચા કરે છે અને જેના તે બન્નેને પ્રમાણત્ત માને છે ત્રીતપમદેવપ્રભુના વખનમા ભરતરાજાએ જે ચાર વેદા રવ્યા હતા તેઓના નિગમગાઓમાં સમાવેશ થાય છે અને મત્રપ્રવાદમાથી અને નિવા પવા માથી ઉદ્ભામિતા તથા પૂર્વાચાર્યોએ દેવોને પ્રત્યક્ષ કરી જે મીતા કત્યા રચ્યા છે તે સર્વમત્રશાસોનો પણ અપેક્ષાએ નિયમતાસોના . સમાવેશ થાય છે તેથી તે મત્રભાગ અધિનરીની આગળ સુરુએ પ્રકાશિત કરે છે તૈયી ગુરૂપર પરાગણે ચાર્યો આવે છે, તેની લાન તે પર પરાગમમા મમાવેશ ષામે ૭ જૈનાવ્યાર્ધી મિથ્યાલીદેવોને પણ સમહિની ખનાવે છે અને તેઓને જૈનગાસન ગન્છના રક્ષક તરીર નીમા હાકે છે તાતુ લ્ડમ મા/દસ્યમા શતુજવ પર સ્થાપિત કર્યાદી થક્ષ મિથ્યાની ચાઇ ગોને દનો તેને વજસ્વામીએ ઉઘડી મૂળ અને બીજા કપર્દી યક્ષને એ તાની જૈનધર્મનો શ્રદ્ધાતુ સમકિની બનાવી શત્રુજપૂષર સ્થાપિત કર્યો છે શ્રી આતદવિમન સરિએ શ્રી માણિબદનીરની રથાપના ધ્રી છે અને

તેની સ્થાપના પાત પુર પામેના અસ્ટ્લામાં તથા વિજાપુર પામેના - બામીમાં માં ગાલિબન્દીનનું આમનોહામાં ગામ બનાર મેન્ટ દ્વેગ છે તેનું વિજાપુર મ્લાનમાં સિવેશ્નર વધ્યુન છે પ્રચારીમાં તપ તપી ગવ આસપી તનીન ભાપ્યુન નીર વગેરેને પાત્ર માનિના મેર્ક હૈત્યસામન દેવનરીક સ્થિપિન થયો છે તેવી જૈત કેમ પ્રપાગમને ગાય રાખી નનીનવામન સ્થાનીક વગેરેને નાજ તિ મારી આત્મી પ્રજેની આપી છે હૈતામાંમાં મુખ્યામાં તત્ત્વાને

અને મારારાવન તથા સાહુના આચાર વગેરેની મુખ્યતા છે અને ખત શાનામાં મત્રક પતી મુખ્યતા છે આગમામાં નાજ ગરહારી ઢકલાદ ક્રીકાર આદિ ભીજમંત્રા વગેરેની વ્યાખ્યાએક રેખાની નથી પ્રવાચ મેં મેરગ લાંગ મત્રરાખોના બામ તા સમ રાખના દત્તા અને સ્વરિ રાત પણ લય જાણીને તેઓને ખાનગીમાં મત્ર રહ્મ્ય આપના હતા મત્રશાસીને ભારમાં ગાપની રાખના હતા કે જેવી તેના વ્યવિકારી પુરા તેના ઉપ રામ કરી શકે મવ દશનધમશાશ્વામાં મળશાન્ય વિનામ છે અને તેને સવ દગનધમવાળાએ શ્રદ્ધાર્થી માન્ય કરે છે. જૈતે જનમત્રશાસોને અને શામનદેવાના મંત્રાને માન્ય કરે છે અને જનશાયન વીર દેવાલ વગેરી માને છે પૂર્ણ છે કારણ કે તે મખ્યયુ હિ જૈનધર્મા દેવનાઓ D તેથી તેઓતે જેતી આધર્મિક અધાદેવ તરી^દ માને છે જતાતા સવ orn दि। हेणा तेमा श्रीसिद्धसेनसरिकृतभवसनसारा । शा મ મે તા ન્યાધારે અનનાયક લીધેકરના યક્ષકમિથી વગેરેનુ સ્થાપન તેય છે પ્રતુત્તી ત્રતિવાની મિત્રે દેવી ટાય છે વ્યવસ્થા મુખ્યતા ગાખતા-એામાં વ્યતિ વકારના શખ્યધારક વસ અને વસિચીના ખર્તિકા મુત્રધો પ્રતિતિ કરેની દેવ 📱 આવે પ્રચાર પ્રાચીનધનથી શાયોતા આધારે મિદ્દ શાય છે ઑક્યુરી પત્રાવળી અવૃત્તિ કારી માણિબદવીર પણ જાણી શકે ૩ જૈનધર્મ મહાપ્રભાવઃ મહસ્ત્રાનધાની ઝી સુનિચઠ સુરિએ સતિકરની સ્થના ધ્રી છે અને તેમા દેવાની અને દેવી-ગાની

મહાયની મિદ્રિ કરી 🗦 🔊 દેવા અને દેતીઓ સહાય ન કરતી હેત્ય તા ભળ્યાં, સ્વામા જેવા ઉત્તરાગ્યહનની સ્થના કરતે જ નહીં શ્રી મહાવીર પ્રભુતે મુનિત્શામા ઇન્દ્રે મહાય આપવા ઇમ્ડા જણાની હની हवे ते महाम क्षेती वा न तेती ते पेलानी भरळपर आतार राणे छ મિદ્રાય વ્યવસએ મહાનીર પ્રત્વેના મહિમા વધારના પ્રવૃત્તિ કરી હતી શ્રીશ્રીપાનગજાએ મિહચક મત્ર યતની વ્યાસાના કરી હતી તેથી તેમને ક્રેવાએ મહાય કરી હતી. ભાગમાં મેગ્મેરિઝમ, હીપના રીઝમ જેવી શક્તિ છે. યતે ત્તે મતના પ્રેર્યા ટેવા આવે છે વ્યતે મહાય કરે છે પૂર્વાચાયોની સ્થવિ ાનની પ ાર્તી - જે મ્લ્યસતના પ્રાત ભાગમાં છે તેમાં પણ પૂર્વચારાએ તીમ શામનદેવાની મંત્રાની મ તથી અનેક ચમત્મરા ખના શના દ્રષ્ટાના ના જુદ છે મનાનની જૈના ઉપર્યુક્ત બાયતને મત્ય માને છે જૈના ચાર પ્રતારના દેવાને જૈનશાત્રાથી માને છે ભાવનપતિ, વ્યતર જ્યાનિન્દ્ર અને વેમાનિષ્ટ એ ચાર પ્રધરના દેવા છે. તેમા વૈમાનિષ્ટેવા તા અદાધી એક રાજ તેણ રકે છે તેમાં પ્રથમ માર દેવનાત્રના વિમાના છે તેના ઉપર નવર્ધનેયા દેવાના નિમાતા છે, તેના પર પાય વ્યવસાયનોના દેવા છે અને તૈના પર મિદ્દિશિના છે તે ઉપર મિદ્દ પરમા નાઓ રહે છે ચંદ્ર સુધ નક્ષત્ર અને તારાઓના નિમાના કે જે આનરામાં દેખાય છે તેઓમાં જોતિકી દેવો દેકીઓ ગ્રું છે અને બુવનપતિના દેવા ત્યા પૃથ્કીની નીચે રહે છે અહીંથી દતાયેજન નીચે ગતે 'ાઈ ફેબને ઉપર અતર દેતા રહે છે એ ચાર પ્રબરના દેત્રામાં કેટના સમસ્તિ હોય ક અને ->તાં મિય્યાની તેમ કે ચોરાં ઈકા તો મુખકતી છે તત તેરાને

 દૂર સખીને વિષ ઉતાર્યું છે તેવા મહતે અનુભત છે જેને શ્રદ્ધા હાય અને પરસ્ત્રી ત્યાંગી હોય તેને અનુબા -આવે છે. ઘટા ધ્યું ીરને નવચ દાની પેંડે જેના અને હિંદુઓ યાતે માને છે અને બન્ને તેની આરા ધના કરે છે ઘટાકર્ધ મહાનીરના મત પ ત્રે તથા જાનતા છે અને તેમા કયા કયા બર્યપર તે અત્ર પ્રતતે ઉતે તેમા વિધિપ્રર્વેષ્ જણાન્ત્ર છે અમારા ગુરૂ મહારાજળી અનિમાગર⊙એ નિ સ દ૮૫૪ ના હાગણ મામમા ઘટા ર્ણુ મતની ગુરૂગમતા આપી હતી *જૈન*ગા*નુ*એક પૈમી ઘણા ખરા ઘરાંમ્બ્રીર મતની વ્યાસતના કરે છે ઘટાર્થની મતગ્યાની न्यम । वा . विलापुर वजेरे के के स्थाने प्रतिन अरावनारा केने। 🛭 तेंथ्याना ત્યા ટ્રાય છે. આપણે જેમ આ માંએ! છીએ અને પરસ્પર એમ્ બીજાને મ દ પ્રીએ છીએ તેમ ચારે પ્રારના દેવનાએ પણ ન્યાત્માએ છે તેઓ પણ આપણને ધર્માકિરાગથી વા મતારાવની ાગથી મન્ત છે છે આપણા કર્મના ઉત્પંત્રા તે નિમત્તહેન થાય છે ત્રી ઉમાગ્વાતિવા यह तत्वायसूत्रभा परस्परीपमद्दी जीवानाम् के सूत्र रूथी तेभा જણા યુ છે કે સસારીસર્ને છવાને પરસ્પર એમ્ બીજાના ઉપકાર થાય છે દેતા, બતુષ્ત્રા તિર્ધચા વગેરે મર્વ એક બીજા પર અનેકરીને ઉપગર મહાય, મૃત કરી શરે છે તેમ તત્ત્વાર્થ સત્રથી સિદ્ધ થાય છે સમકિતી જૈતા, દાત દુતિયામાં એશ્તા સમક્તિી મત્રપોતી મ તથી છવી ગતના નથી તેઓ હિંદુ મુખ માન વંગેરેની ખત મહાય ઉપકારધી માતાના ૬ ખ ટાળી શકે છે. અને આ જીવિધ ચવાની શકે છે તેથા મ્ઇ તેઓને મિથ્યાન લાગતું નથી, કાર્ય કે જૈના જારો છે 🧦 અ પ ધર્મીએ તે કઇ વીતરાગદેવ નથી તે પ્રમાણે જૈનગૃદરયોને પણ તે વીતરાગ મતદ દેવ તરીકે જાજુતા નથી તે પ્રમાણે તેએ શાસન દેવાને મમાત કર્માં બનુ પાની પેંડે જાણે છે અને નેમને વૃપ દોષ કરે છે સ્તવે ટેલાયી ઘટમાંબુ દીર વધેરેને ખનતા : તૈયી રન્ખિયા અંદીને ખ^{રૂ} પર નિયાન શાર્યું તથી છે છેટા રોમ હી તૈયા ખનવાયી નિયાન ૧/૧ તથી કંટો અદિવસી નીત્રમાયેલ તતુ પરમુખ માત્રને છે અહે કાય દે દેવેનિ સ્વેપથી ત્રયું ખતી પુરું છે તૈયી તૈયને બિલ્યાન લગ્ત તે પી

શિ ત સમ — "કે તારીને ધાનાના શુનાગુનકથન ન્નનુમાં" મુખ ુખ થાત છે. તેમાં દેતનાએની હતા શ્રાવ તેટ પર્ય ? પુન્દ મુખ્ય ત્રામાં મુખ્યા પાસર , આખ કરી કરી કી શાધા ર અને કૃષ્યા પત્રન સમ્મા મામોર્સ્સ ભાગ પ્રાથય હતો પાસી સમાસ્ત્રીઓ માં માના પાસ્તી

ક્રમ તમાનુંજ નુખરૂ ખ શર્ય હ તો પડી શખ્યતદેવની મ યના પ્રત્યી તી જાર છે ? શા—નવદ હતે સ્વર્યપ્રાનુધારે કામ કામ મુખ્ય ખ શર્ય છ નુખાન મુખ્ય ખર્ય દ્રાગ્ય ક્રમ હે તે ઉપદાન કારણ છે અને કળ

··ગ ત્યા નિકાચિતકમાં ય ટ્રાય છે ત્યા દેવેની મહાય થયો તથી અને

તપ મયમ ધ્રતા ૭તા પણ શ્રીમહાનીર પ્રભુતે અનેધ્ ઉપયંગા ન ના પડ્યા તેમ તેમા પડે છે તેમાં મોતા કું અને દેવોનું પણ કશું ચાનવ નથી ગામિએ ત્રિ મ ૧૮૭૮ મા હિંદુઓને સ્વરાજ્ય મળગે એમ મ્યું હતુ પણ હિંદીઓના હુછ રતરાજ્ય ગ્રાપ્તિમાં જ્યામુંની નિધચિત કમાં છે ત્યા સુંયી તેમતે સ્વરાજ્ય મળી શખ્વાત નથી વિ સ ૧૮ ૧૮ મામ કે દિશેઓ માગમાર્ગ એના વિશ્વામી બની ગયા હતા ક હિત્ને ત્વરાજન ગાની અપાનગે પશુ નાધી અપાની શયા નહીં તેમા લિવિઓના નિમચિવ મ્ર્માા ઉવ નરચુ કે અને ગાનીછની ઇચ્ઝા થવા તે હજમુતી સ્વરાત્ત અપાતી શક્યાનહીં તેમાં તે બાયતમળધી ગા નીજીન પણ નિકાચિત કન છે કર્મ એવા છે કે તે ભાગનના પડે છે મનિમચિત ક્રોપોના તેમ ત્રાયમભાગ ધ્યાન વગેરેથી નાશ થાય છે પશ ઉકટાબારે ભારેતા નિમચિત કર્યા તા અવસ્ય ભાગવવા પ? છે, વ્યને તેની પ્રસ મહાવીર દેવ પશુ ભવ્યા નથી પ્રસ મહાની ?નને ન્યશુન ,મતા ઉપ હતા ત્યા સુકી ન્યશુપ્ત નિમિત્ત સોગા મળ્યા હતા વ્યો જનારે શુભ અંતે તેમને ઉદય થયા સારે ઈન્દ્રિ મ્ટિવા શાતા પ્રાતા માવ્યા ગાતમ મુદ્દને જ્યારે ખીતા વાગ્યા વ્યતે તેની તેમના પણ નિધા ગો ત્યારે તેમના શિષ્યોએ યુગ્યુ કે તમને મ્યા મ્બંધી ખીતા નાગી / ત્યારે ગાતમ મહે કર્યું કે અહીંયી એ ાડ્યા ભવમાં એમ્ મનુષ્યને વાની નાખી તે વખતે અર્થ ભાગ તેના ઉપયી દાન પત્રે નિધાના હ માય જે કાઇને પગ હાથમાં પેંગ્માં, કાનમાં જ્યાં જ્યાં જેની જાતની

વેતા કેટ છે તેને તેથી ત્યા ત્યા તેનો વેના જોશવત્તી પડે ઝે શ્રીપાત સાતને કેટ થતા પશુ શુભાગના હવા આનવાના હતા. તેથી નાન્ય સિદ્ધાદની આરાધના થઈ શુભા ગર્મ, તપ, ત્રપ, સવસ દાન, યાન ટ વાળી પ્રવબવર્તા કરેના કર્મના દ્વાય શાળ છે અને પાપ મેં પછ પ્રધ્ય

ર્મના ૩૫મા ફેરવાઇ જીવ છે અને કર્મના અનિકાચિત કર્મો ધના પપ્ નાગ શાય છે તે પ્રમારો ત્રીપાત રાજાને થયુ ન્યી તેના મેટ ગામ ટળી ગો! અને શુબારમેતા ઉત્ર થવાના પ્રમુગ આ તા જ્યાર ઇકે ૮૬ ભૂગમેવી દેવને કચું કે તમા દેવાનદાની કુખથી પ્રસુ ભળવીરતે શ્રી નિશ તારાણીની કુખમા મૂકા એમ ઇ કે હતુ અને હવિણામેડી દેવે તે પ્રમાણે મર્ડ તેમા પનુ મહાની કરેને ડાબકમે ત્યમાં દેવાની સહાય भगी जैम मिद याप छे क क्यारे भदाशिशती तीर्धं धरनाभ भीत्य प्रभागी त्यारे न्वीकी सभवभराजनी रथना हरी अने पश्चने પૂર્વાસન્યા સમસ્યક્ષ્વર્તિના સાર હત્તરપુત્રાએ વ્યશુભાષ્યે બાધ્યુ હવ તેની ખુનનપતિદેને સાર હજાર પુત્રાને ગાળી બરમ કરી દીધા ત્યરે તોકૃષ્યુની દારિંગ નગરી મળવાના પ્રસામ આ ના ત્યારે શ્રીક પ્લુયી પણ તે બચાવા નિડી વિત્ર પુરાસુના આધારે દેખા કે શીદૃષ્ણો દેવના ત્યાય કરા અને અજૂન-શ્રીકૃષ્ણના ગાપીઓને લેઇ દરિનનાપુર તરફ જતા ત્યા વ્યક્ત વચ્ચમા અજીવનું સમાઓએ લેમ્યા અર્જીવ ખાનાવતા ગણાતા હતા તેલહ તેતુ બાલ કાય કરી શક્ત ાની અતે ીપીઓએ કર્યું કે દ્રીપળ અર્જાન વગેરેની સહાયકરનાર કૃપ્યું !! સહારે ન્યાવ ! પણ કૃષ્ણ આન્યા નહીં ન્યતે ગ્રાપીઓને તાના પાતાના ઘરમા લેઈ ગયા હિંદ વિ ૧૮૭૮ મા ગાંધીજીનું સગી હતુ તાેપણ મગ્કારે માંવીજીને અરાત કર્મના ઉત્તથી કેદમા ઘાત્યા અને શબ કર્મો ય થેડા ત્યાર ³ માંથી દૂરથા તેમા શુબાગુબાએ વ સુખ, ખ કળમા દેવો મતુ તે વગેરે છેલા તિમિત્ત ફેર્યુ થાય છે એલા કર્મના સનાનન મિહાન ફે જેતા હિદુઓ તાહા માન્ય કરે છે તે પ્રમાણે ચારનિશયના દેવા ૫ખ અન્ય જીવાત સખદ ખમા નિમિત્ત કારણ જાને છે એમ જણાદીને હવે દેવા ભાગાના બ્યાનુસાર ભાગાને મહાદી થાય છે તે જૈનશાસાના मानाइ बरहीति ही

ત્રિયપીશનાકાયુરયચરિત્રમા દેખા-શ્રીકૃષ્યે અકૃષ્ય ન્રીને દેવની આતંધના મી અને દેવ પત્યક્ષ થયો ભરત ચક્રવર્તીએ વ્યક્સ મી દે મયક કો રાત્રો વિનાની માવના કરી તેને વિદ્યાઓ સિંહ થઇ પૂર્વનવના રાગથી વજ્જન્વામીને તેના મિત્રદેવે નિધાઓ આપી ત્રી હેમચારાર્યે ગિરનારમાં દેતીની આરાધના ન્રી અને દેતીએ વરાન હત્યામ્યું તી નિમળગાહ દડનાય - કુબારીયામાં અનિગદેરીની આસોનન કી અને વિમાશાહને અમિકાદેવીએ સંજય કરવામાં તથા દે ામર જ વધાવતામાં સહાત કરી શ્રી પ્રિયગ્રસરિએ એકગમાં અનિકારેલો? અધાવતામાં સહાત કરી શ્રી પ્રિયગ્રસરિએ એકગમાં અનિકારેલો? ું ત્રાંત્રા મહાર ભારી માનાની પશુષદ બધ ત્રો શ્રીકૃષ્ણને ટર રામ હરનારી ભેરો આપી ત્રી ત્રેવીશમા તીય ર પાર્શ્વનાથતે હમક મેધમાની વે ઉપમગ માં ત્યારે ધરણેન્ટ્રે અને પત્રાનતીએ આની મહાય કરી એમ કત્પમ તમાં જસાન્ય છે શ્રી દીરમિજય સરિને શામનદેવાની સહાય હતા ત્રીજિત ત્ત સરિતે શામનદેવાની સહાય હતી Cત્તરા યયત સતમા હો ખી ચડાન સાત્ર થયા તેમને યત્રશાળમાં બીખ મામના ધ્યાપણે *પરવ* ઉ'તા ત્યારે થક્ષે પ્રગળ થાને હગેટતીને મહાય કરી ફેફ્ફિયામને યુદ્દમાં દેવે મહાય કરી હતી જ ભુસ્વામીના શયમા તે જ જે જ ઉપાત્રારે લખ્યુ 3 કે એ ગામના કાથપગ સરસ્વર્તીક *લગાવના* જાનાત લખ્યુ ૭ ક જ જાના તાલ વરલન આપ્યુ ^{પ્}યુવ ત્રી અને તેથી સરસ્વનીએ પ્રત્યક્ષ ત્યાની વરલન આપ્યુ ^{પ્}યુપ્ય ત્રાં જાત તથા અરસ્વાાજ તારહ સુરિતે સરમ્વતીએ પ્રત્યક્ષ થે વગાન આપ્યાની વાત પ્રભાદનનિમા થાત સરમ્વવાઅ પ્રત્યહ્ય લ ૧૧ ... છે ત્રિણુના શિના ગને દેનીની અહાય હતી શ્રી કુમ્યું ^{૧૧ન}મા ઇ તેલણતા શિના ગત દનાવા વ્યવસાય અમારી હતી મોહ પૂર્ય પેળ શ્રી હિમચ વાર્ય દેન મારફત મહાય અમારી હતી મોહ પૂર્ય પેળ થી મતીઓને દેવાએ મહાર કરી હતી એમ જેના કરો મેરાની વીરાની મહાયતાના અનેક મ્મનાએ મળા કર્યા જેનાં તીત્ર નિષ્યિત કર્મ કે અને તમ જય

હતા દૂર રાક્ષસ જેવા મતુવીના ુમવાઓથી ધર્મી પ્રજાતું રક્ષણ પ્રતા હતા કુ નારી પ્રયાઓના ધીયતનુ રક્ષણ કરતા હતા **પા**પીઓના ત્રમતે હાતી પ્રાથત કતાબુ કરતા હતા. ધનુષ્ય યાણવડે અનેક દુ शल्यान्तेरे यह भीते तेकाते छला व्यते व्यारिशामा शान्ति ે તારી તેમને સખડી પ્રિય હતી તેઓ અનિધિનાની સેવા બન્તિ ધરતા દના અને ઘણા શરા હતા તેથી તે મરણ પામીને દેવ થયા અને ગાનનનીરામા નીરામા નીર ત^{ાકુક} તેમની કપૂના થ**ે** તેઓ પ્રવન તમા પરાપકારી હતા તેથી વીરુના ભવમા પત્ર તે બંદે તેમ્બી ધર્મા મક્તજના કે તૈઓના રાગકર્માનનાર સહાય આપે છે પૂર્વભરમાં તેમના હાથમાં ધનુષ્યત્રાણ ખડ હતા તૈથી તૈયની યર્તિના હાથમાં ધનુષ્યત્રાણ ખડે આપવામાં આવે છે તે સન્યગ્ હિદેવ ક્ષત્રિય રાજ્યના જેવા ન્યાતમા ત્રાવાથી અને ક્ષાય પણ તેવા કારો કરતા ટાવાથી ઉત્તર વૈકિય શ⁹ીરની ન્યપેક્ષાએ ધતુષ્યમાસુવાળી તેમની મૂર્તિ કરાય છે જેમ રાજાતે સ**ન** ધમવાળી પ્રત્ય માને છે તેમ ભાવન કરિને પશ ને સવના બનામા શકાર રક્ષક મૈનિધાની પેડે ભાગ લેતા ટાવાથી જેન હિંદુ મેહ વમેરે ધમવાળાઓ માને છે પૂજે છે. કાકતરને કાકતરની અપેયાએ માનનાથી જેમ મિ'યા 4 લામત નથી અને કવા કરાવવાથી જેમ મિધ્યાત્વ લાગત નથી તેમ ઘટાકર્મની તે વીર તરીક માનનાથી વ્યને દેવાધિદેવ વીતરા ગતે અરિકત દેવ તરીકે માનીને પુજરાથી લોકાન્તર મિલ્યાન લાગનુ નથી. ઘટાતથુનીર છે તે અવિરતિ સભ્યગૃદષ્ટિલ છે તે ચોથા 🔟 શુપ્રણાના જેન મુદ્રમ્થ જેવા છે તેથી આપણે તેમને શ્રાનમાં પાતાના ત્ર વક્ષ્મધના જેના નિય ગળી તેમના સુર્ણાની સ્તૃતિ કરે નેમની भूति जामत युष हीप नैनेच धरे तथी क्रम सभीतिमा हुन। લાગનું નથી જો તેમને તીર્થંકર દેવ તરીકે માનીએ તાે મિથ્યાત્વ



વેષમાં દેવ કૈનીની ત્વૃતિ ત્યાપ છે અને તેમાં કેવ "ર્યાની સરાયતાની વાત આવે છે અંતર પ્રસ્તિન નિષ્યત્વ કિ શિયામાં અત્યાગન દેવાંની અને "નોની સહાયતા અને" નિર્માણ અભ્યોગ અખે તેમાં દિનિવારણ, કરવામાં? સંહોપતા પ્રત્યાની વાત આવે છે તેથી તેની વીને પશક્યું મત્યા દિર્મા ત્રવૃતિ કહ્યા તેની વેપ સ્થિત પ્રત્યા હોંગ અપાય શું પ્રવાસ નિર્મા તેની તેમી પણ સમ્યાગના અભ્યોગીને અપાય દીને તેની પાસ સમ્યાગના સમાવી તેમની સ્વરાણ સમાવ હાંગ તેમની સ્વરાણ સમાવ તાની માન્યનામાં કિંમો પ્રતિના વિધિમાં તાની માન્યનામાં કિંમો પ્રતિના વિધિમાં હાં હોંગ પ્રતિના વિધિમાં હાં હ્યાં હ્યું તેમની સ્વરાણ સમાવ હાંગ હોંગ પ્રતિના વિધિમાં હાં હોંગ પ્રતિના વિધિમાં હાં હ્યાં હ્યું તેમની પૂત્વ કેરત જ નહીં

આપા જૈનાને આવક સાત્ર ધમ આરાધતા વૈદ્યા ડાઇરા ગામાં સૈત્ય પાત્રીમ માત કરે છે અને આપણે તેને તે તે દ્વારા અપે ताळ भावत भा धिमे धीमे भी किनेन्द्रहेव सग्रह वगेरेते भदासाधन પરમ નાતન તરીકે માનીએ નેથાં કર્ઇ ન્યાયણને મિથ્યાન્ય લાગી જન્ નથી અને આપરે જેના કઇ આડા માર્ગે જતા નથી ધરણ કે સવની અનુક્રમે મહત્તા ઉપોાગિના ભાગીએ છીએ તેમા ડાયર ચૈન સૈન્ય મિયાદ રાજા વગેર પણ અપેક્ષાએ જેમ સુમાધન છે તેમ તીર્ઘક્રગ્રેલ भ ग्रह देव ४ र अनेप्याको महास्थापन अ प्रश्न ते नेमारी उत्तर વૈ ા પાનીસ વગેર તીર્થકરરમઝહાસાનનની અપેક્ષાએ પર પરાએ નિમિત્ત સાધન-ઉપીંગી સાધન તરીકે ગુણાય છે અને તીયકર દેવ 11 અને જૈનધર્મ ન કના અત્યત મહાસાધન નિમિત્ત કારણ મણાય છે પણ તીર્થકર વીતગગ દેવની મહા સાવનત છે તેથી કર્ક વેચગ્સા-वर्गेरे सरायगरेकेनी अभारतता अलानी नधी तेम सामन हेवी प्रश ધર્મમાર્ગમાં આત્મખી દાહિ કરવામાં વિધ્ન નિવારષ્ટ્ય કરવારા હોવાથી તીર્વકર રૂપ ગઢાસાધનની અપેક્ષાએ તેથી ઉતરતા સસાધનરૂપ ગણાય

છે પણ તીર્થ રદેવના સાધનની આગળ કુમાધનતરીકે ગણવા તે તા અગ્રાનના છે, સાધન કરિ આગળ માંગે દશામા જતા પાછગથી પણ અ તેને ઉપકારી સાધન તરીકે દેવાથી પ્રવાહની અપેક્ષાએ સુમાધન જ ગણાય છે, પણ કુમાનન થઈ શધ્જ નહીં, એમ જૈનશાસા જણાવે છે શામનદેવાને મતિશાન, શ્રવશાન અને અવધિશાન દાય છે તેથી તેઓ પાતાની પાસે આવનાસઓની ત્યાનિયાર જાણી શકે છે, તેથી તેઓ પરીયા પરીતે શ્રી પ્રબુબકોને યથાત્રિમ્ય મહાય કરે છે ટે જે સહાયતે પ્રબુ ભાત જેતા કાચ જારી શકે અને જાણી ન પણ શકે સ્વાર્થી મતું પોના કરના પરમાર્થી દઢ જૈનોને તેઓ માગ્યા વિના પણ ગ્રપ્તપણે સહાય કર્યા કરે છે. આપણા બપુઓ, મિત્રા હિતસ્વીઓ, જેમ પ્રેમથી આપ ધુને ખાનગી ગીતે તથા જાડુંગ ગીતે પ્રાર્થ્યા નિના પછા મત્ત કરી શકે છે તેમ ગામન>ત્રા પણ જૈનાતમાં એ હેવાયી તેઓની માથે ગુદ્દ>ધા, સાવમિશ્મગપગુના અનિશુદ્ધ ત્રેમ ધારણ કરે છે તેઓ પ્રમ્રગાપાન ગ્રામપણે અખ્યમાન પ્રમાગે સહાય કરે છે - જેની તેઓને ખત્મર પત ૫ ની નથી દેવદેની યક્ષયક્ષિણીઓને અમુ મારુ કાર્ય કરી ! તા ન્દ્રને વ્યમુત્ વસ્તુ આપીશ એની રીતની ત્રાધામાન્યતાથી અને દેતા નાતે છે. પૂજે કે પશુ તે રીવાજથી જેતા સ્વાર્થીમમ કાળ ક્ષેનાસ અન 🕫 છે, પલ જેઓ ધમમાગમાં પ્રાર્થે છે સ્તરે છે અને ળાનાઆખડી વિના દ્વત્વી એાના મતતા જાય કરે છે અને દેનગુરૂધર્મની વ્યારક્ષત દર છે તે સાત્રયતી મધ્યમ દંશો જણવા

ઝુંક્ષ સુધારા મુખ્યાનું કોલી અને ફેક્સ્ટ્રેન્ગ સુધી સુધ કની સ્તુતિ કરે છે. સાતમા શુધારાયા પહોચેના મુનિક્રે, ટ્રેન્ગું અને ફેલી સ્રાની સદ્ભાવની ઇચ્છાને ગ્લમમાં પણ કરતા નથી 'ઝંદ્ર ન્હર્દ્ધારુગ્લના' સમયગ નામમારચિતી અને મુનમાએ પુત્રોની 'ઈન્છ ! ફેટ્ની સ્થાપલના'

હતા તેયા તેને ટ્વે વધીશ ગામાં આપી હતી તેથી વધાય પ્ર થયા તે ચનાવાના હરણ વખતે મરણ પામ્યા દના ઉપરના દનોનોથી દેવદેવીની સહાવના ચાય છે એમ મિહ થાન છે જેઓ દેવા અને ?નીએ પદ્મા વીરા વગેરેની હય નીતુ ખડન કરે છે તેઓની માન્યના જૂરી છે જેઓ સ ાયતાલુ ખડન કરે છે તેઓ જનશાઓની **્યાપના કર** ઇ અને केनधर्मना शत्रु तारीड नास्तिक्वरीड व्यत्रिमा भिक्ष हर छ । व्यत्रीमे તેના નાસ્તિકાની સચલિ કરતી નહીં જેઓ જૈનશાત્રામાં કહેના ગ્વગ દેવનોકની ઉત્થાપના કરે છે તેઓ પ્યુ સવત મનાનિરની Cત્થાવના કરે છે સ્વય અને નરકની ઉત્થાપના કરના જનમાનો જૈનનમેં અને જૈન तीयभ्रेशनी Citiven साथ छ कैरनशासनहेत्रानी निन्हा जासानना भ्रतायी ખતે શરૂઓની નિના કરતાથી _વર્તના સાર શાય છે. પગામસન્જનાયમ वैवाश जामायणाय, देयोण आसायणाय अने पाउ ^{ફેલા}ની અને કેનોઓની નિત્ય *આશાનના અને તેઓ*નું ખ ન મ્રવાયી पापम्भ व्याप छ શ્રી મત્નિનાથ **ો**યાની પાનગર ^ઢગરી*ના ગ* મ_કડી વગેરે **ચમ** ભારી વાંગ્રામાં એ સાના હુંઆ નાય છે તે સર્વે નાધાઆપ્યાં દે તેમની લખ્યાની સાવચના ભાષા અને છે અને દેશ ખાન કે હત્યારિ ધ્યનારા तथा तेणण व्यानभाक्षकच्या तथा नाल्तिको रहिनाला छ तेका पानानी દિટે એવા બીજાને કપી ક્ષેત્રારા અર્ચના જના કે જે કુનયળ જેના રું તેઓ અન્ય દશનીએલના તીરો પ્રત્યા જૈનની તેની યાત્રાએ જનત છે તેઓને નિયતસમકિત થવાના ઘણા 'કરતો મત્રે છે અને તેનો જિન ભાગની ભક્તિ સાત્ર વગેરેની ભાગિ કરીને ત્યા નિક્રેશ તથા અનતનાલ પુરત ઉપાજન કરે છે તેથી ઉચપુષ્યકરોહને જાત બવસા પાર તેઓ मरनीपुत्र स्त्री वादित क्युक्तीने आप्त म्यी शह छ ज्यते ने वादि

(원) વધતે વધતા અહિત્વ-ક ૧.સનવેલે મહાય પણ કરી શકે ડે. રે ધ, હ્યાપે મુલ્વે≘ છે તેળ તેમ કશુ આવર્ષ તથી. દે~વ એના ખડી भी संज्ञानी १ ।। राम मं विनयो निन्दी अविनयमिदिस्ति सेन्द्राः-નારા त्रा ग्रीमाम्बर्ड इतिकारिसरि श्रीरूप्यक्टर को 1મીં स्था भी दिल इतियान स्था है अप रेडिट-15/1 એાને क्षांत्री वर्षेत्र ने के अपनित्र अन वर्षेत्र हे के हैं के હાય मिर्ने हें मिर्ने कि इंस के देखी हैं में भी ાની भीति कामे कर्ड उत्तर है है जो मुख्यानिय व्यक्त 0 HEREN ાની िराक्तनरहत्र नेते हत्त्व हेर हर है اوا Wally 25 5 3 gad of 25 5 5 œ 11/2 65 12 2 2 3 3 85 god 5 7 6 9 155 16 And the series of the series of શ A LES AND SECT BACK SECTION 3, Michael Michael Berger ણ STATE OF THE STATE 14 401 451 553 554 555 55 55 મા 11日本大学の日本 11日本 11日本 H ALL THE SEED BY BY TO BE AN ાને AMED SERVED STREET 12 η All the time of the state of the state of

(Ro) એતે તપવગેરેના મત્રસાધદાથી બળથી અવધિતાનવડે જાણી શદે છે અને તેઓને સ્વચ્થાને એવ એ ા પણ સહાય કરવાની શકિત વડે સહાયક થાય છે અને કેડી વખન કેત્યરા પણ દશન અમાપે છે, તથા સ્વપ્તમાં પણ દરાન આપે છે દેવોના અને દેવીઓના નામે કેટના જાણ લાકા પાખક ચનાવે છે અને માન પૂજા લગ્મીની લાનચે રહને દેવ પ્રત્યક્ષ છ દું અયુક કાર કરી શતુ યુ એમ જાત કરી લોકોને કરે છે તથ સોકાની આમળ ધૂો છે તથા અસુક દેની પારા બોકરા માત્રે છે એમ પશાન કહે છે એના જાઇ પાખડી દમ લેખેશી કહાપ છેત્રસ નની અને તેઓહ કેશન સાત માનલ નહીં અને તેઓની સગતિ પશ્ કરતી નહીં ફવે! અને દેતીઓ પાડા અને બકરા વગે"તુ સાસ ખાત નથી અને તથી ખુબી થવી નથી એમ જેનશાએ પેક્સર કરીને જણાવે છે માર્ર જૈનગાએ મિધ્યાની દેવાયો અને દેવીઓથી અને તેઓના અન્યોના નામાની દેર રહેવાલ કરમાતું છે. અનુ અનવાસનદેવા કે એટમ જનસંધના સહાન છે અને જિન્યમક્તિષ્માં છે તેઓની સાથે સાવિમામ્બાંડની દિરાએ પ્રેમથી વનવાનુ જલ્લાવે છે જેના જનમિન ગ્યા પ્રવેશ કરે છે ત્વાર શ્રી તર્મિકર વીતરામદેવને શ્વનનાયક પ્રલ તરી- જાણે છે અને તેમની નીચેની કેરીને તથા ગ્રેપ્યના વગેરેમા यक्ष यदिए हिने प्रदाना भेवड तरीह ब्लो छ अपने तीर्थंडरपरमारभाने તેમની કમાએ પૂછ સ્તની શત્રો થટે કે અને શાસન ેવદેનીઓને તેમના અનિવર પ્રમાણે માને છે પુરુ છે તેથી જેનોને લોકેશ્વર મિલ્લાન लागत नथी के करेता दि। टेगर भी । तार न्या छ ते इस्ता के करेता તૈની ભારતાથી મામન >ત્રેની પામે જાર છે નેઓ કરાડમણી મિધ્યત્વ વાયનાઓથી બચી જાત છે અને તેઓને જૈનોનો પરિચત સ્ટેસથી મળ સમક્તિ અહિંતા ન્યાચારમાંથી ખગી જવાનો ૧૫ન પણ ન્યારનો



ર્શ્વરોને પછીથી શ્રી,સર્વિક સુખ ગાટે પ્રાથના કરતા નથી અને પછીથી નાં" સુખાર્થે તીયરેટી માનવાના ત્રના માત્રસુખાય તીધિકીને માતે છે પૂરે છે અને સાસનારેલીને થયું આ સુખાર્થે અન છી માતે છે કેસેની કર્યા કર્ક કેરું મુ પ્રાપ્ત થવી નથી નાદ સુખ્યપારી નાં પ્રસાખમા

આવતા થો કાર વરી તાર છે સંદર્ય જેતા દેદના કુનામારથી છે તેઓને દેવસુક ધર્મની આમથી નદક દેવ છે અને તેઓ ઓપે જેન ધર્મસદાત દેવ છે તેઓ ખરખરીરીને સિચાતીએ કરતા વ્યવત શાળા ઉત્તમ છે અને તેઓ અનુક્રમે જૈન મામા દાવે દળવે આગમ વધ છે તેઓને નેઓની નિયારત્રકત્તિમાંથી બાન કરી અનુ માની અરિધારી બનાવવાથી તેએ ક્રમ આગળની ત્યાને પ્રાપ્ત કરી તકતા નથી અને વતમાન શામા સરાહી થાય છે અને ઉ છા પતિન પણ થાય છે જેઓ જૈન તે ત્રોની નાવી શતીમાં શ્રધ કરે છ તેવા મશયાલમાંએ 47 87 ena 3 લા કિર્દ કટેનાતા મહાત્યા તથી જેવા રે પણ દુનિનાના સ્વતા વને પ્રાપ્તરુવાની ઇન્છા રી છે. ગાની ૩ ન્હી પા મૃતિ સ્વરાજ્યની નાસનાથી રહિત થા નથી મત્સા તેઓ નિત્રત્તિમાળને પમ કરતા નથી તા ગઢગ્ય જેતા કે જેઓ નાયા અને પાચમા ગુખરથાનામાં છે અને જેઓ મેન્તિ મુખની ઈન્ડાની સાથે હજી સામારિક જ માં મા વવાની કરા છે તેઓ લત્મી ઓ-પાન સ્વસન્ય વીરેની કરા કરે અને તેઓની તૃષિ માર્ગ શાસને માની પણ આરાધના કર તેમ કર્મ જેનશાનાથી તે વિરદ્ધ વતતા નથી તેઓની નિદા કરતી અતે तेया पुरान्ति भे नीनाभा नाग हेश भारे छे ध्वा ध्वत ते दोन જતાં અગ્યવે છે એમ સમજવુ ોઇ પણ તીથ વા કાે પણ મસ્થા થઈ એ / તે તેમા ભૂત ટ્રાય વાત હોય પણ તેની ટીતા નિદા કરતી દોષ તો ડી બધય છે તેથી કઈ ગ્રહ્મનુ ભા તોને ખરાબ અમરથતી નથી ગૃહ ૫ જૈતો સ્તાનિગરે નર્મપામાં શકે છે તીર્થત્થોની યાત્રાએ જનાગ જૈતોએ માય માનવુ યથાગક્તિ આતિમું દયા પાગની ચોરી ધ્રી નહીં પગ્સી સાગ અને સ્વતાગ મનોષર્પ લબ્ધ્યન પાળનુ જેના વતાને તાગણ ધ્ર કે અને પ્રસુની યાત્રા ત્રીતે તેવા શુગા પાપ્ત .ર વખો અલ્પામ કરે છે અને ત્યા સાર્ડુઓ પણ તેઓને સર્ડ્ડુઓના ઉપરેશ આપે છે તેથી જૈતામાં ડુચણ દુડાચાર રહેતા નથી અને હાય છે તા તેઓ અભ્યામ કરીને દુગુણ દુરાચાગનો નાગ કરે છે. જેના તીયયા તાએ જાય છ અને પ્રભુના જેના પોતાનામા રહેતા મૃત્યુગોના પ્રાથ કરવા 'િક છે અને એક તેઓને જૈન શુ એ તરફથી ગાન મળે છે તેથી જૈતા પુતાિની લાનમાએ બોયણી, પાનમર નગેરેતી યાતા**ર્યે** જતા નથી પણ પ્રભુની સેવાબલિત માટે જાય છે એવા સમજા જૈતોન ખામ લક્ષ્મિ, > જે સમ્મગ્ર ટિકપ સમન્વિયી પ્રગરેત્ર તેમ છે, તૈયા જૈતાની અને પાનમર, બાવણી સખેશ્વર નગે` તીર્ધોની નિન્દા રેનાગ—આગાનના ત્ર્ગનાન નાસ્તિતાની સગતિ ક્રગ્ની નહીં પાત્રાતિક રાત એ ધત વગેરેની આશાએ જનારા જેતા પણ પ્રભુતીર્થર વગેરેની ત્તેવા બન્તિમા જોડાઇને યુખ્ય યાત્રે છે અને આ ભવમાં પણ તેમને યુણ્ય ર્યો છે એમ પણ બને છે અને હેવટે તેઓ પા મનિક સુખની આગાર રિવ કક્ત મક્તિ સુખની ઈ² ગુએ પ્રમુના મેનકો તગૈકે તેના જેના ગતે છે. માટે

ગમે તેરી નિ'યાત ગામાં પણ તીયસ્થનમાં તથા સામનદેવાં પામે જવામા હેવ?આગળ ચય્નાનું થાય છે કારણું? સાચીન્ય આગળીને પાનળ

મતે છે શીસનેને પ્રથમ મિથાતવગુખુસ્થાનક મ્લુ છે મિથ્યાત્વ છે તેમાંથીજ અપક્રિનમાં જવાના માત્ર ખુ-વેદ માય છે. તેથી મિધ્યાત શામા પણ મિયાત રાષ્ટ્રમાન મણાય છે ત્રેરી રીતે તીચ સ્થપોમાં બી પ્રવા િની કચ્છાએ જનારાએક તથા શાયન ટેવરેનીઓની બાધા માનનારા જેતો પશુ ભાષીજ આગળનું ઉચ્ચ શિમણ વવન પાળવાના અનુમધોને પ્રાપ્ત કરે છે માટે ધરામ્બ વીરાદિની નિદા કરનારાઓએ સન્યતાન તથા ક્ષેકોની ધમ પાગવાની પ્રતિનો ખામ અનુસવ કરવો જો એ કે જેથી તેઓ જૈતશાનોથી તિરૃદ્ધ પ્રદેષણા કરી પાપના ભાગી ન અને માણસા વિ અ ૧૯૮૦ ના અહાની જયાવી પ્રસા વે ઉજવારેની નીર જયતીના નામે જ્ઞાત પુન આ ૧નીંગ નાચન્ય નાપાનીથામાં ગાધાન નધી લખ્યુ છે તે મ ત્રધી ભગવાનુ ક ઘટાખ્યુ નીગની નાધા નામના નિયમોની દાર મળા લીંગાના લા. તનમ્થ દે હખાવી બુળર પાડી છે તે +ઈ અભારા તરફ દે જ્યાવવામાં આવી નથી તે મુબધી અને જવાય દરનથી ઘટા ખ્ય મેળીરયક્ષ સબધો પૂર્વનખાઈ ગત્ર છે તેથી હવે તે સનાથી વિગરસખ વાતું રહ્યું નથી હા નના ક્રેક નાક સુનારક જિનો ર જેઓ રાજકરી દે પ્રકૃતિવા હા ધમ તહાચારથી કુવર્લ નારિવ સત્તની મને નાર્યો છે તેઓનો વિધાસ કરશા તો ભાગા ૩૦ નાક તેર વશિયાના એ ે ેવિકાના જેવા વિચાસ પસારે કે અને हना हरेर धभना धभशुरकोतो जाने धनना रीसानेना नास दरवा િ છે. આ કુંગ્રેની ન્યાગીઓની સરથાના નાત કરવા દ્વાનમાં દેતાસમાન મારક દ્રા દુખ પશુ નાદિત દ્રાની ધૃષ્તિ થ િ તેઓ સાગીઓની भिन्ने विचार छ ने वैभा हमनाम न्या नवा तहि हेजदा में सामे नामा छ તે તેઓ જૈતરાઓમાં ઘરો કપિત બાગ વધી ગો છે એમ માને છે ાથી કેર નાક તેં! જેનાગોગાના સ્વચ અને નરુ તેંદ્ર પ્રસ્થોની પેંદ્રે પ્લાચાર્વે ા કરેતા છે એમ સાત્રે છે કે તાર સારેત નાસ્તિક જેનો તો ત્યા

પોતાના વિચારાનુ ખ-ન ક`નાગ સદ્યુ સચ્ચિની અષાએામા જ્ી નિ 1 ત્યાંવે છે અને જૈનશાનો કી અગ્રાન એવા કેટલાંડ ભાગા સત્તાપી

ગીએની નિ 1 કરીને વેઓને દ્વા માધી બાગા નવાન લેવોને સા-યુઓ ત'ર અરૂચિવાગા ખનાવે કે અને જૈનમાનુગુકદાહી બનીને

જૈનોને પેતાના પામા ખેચીત છે અને તેઓ પણ પોતાના પગ પર કુડાય માર છે, તે ઉભયનાના થાય છે ૫૫-નિય મામા નાનીજીનું સ્થાન છે ને ના રે કેટના નામનારી જન તેને તાત્રફુડાર આને છે અને ન્ટ 3 કે જૈન સાધ્યામાનેની મેોન

મરી બેઈકરનાર નવી તે સામધી તમારા ત્રાં અનિપાય છે? ગાવી છતા ચાર્જિ જેવુ રંતેના કોઈ સાહતુ પણ ચાર્જિતની એમ તેઓ રેટે છે ને સમેવી ગાે ખુનાના છેટ ઉત્તર—જંતાગમ રાશ્ચાના આધા ? રાતેના ગારી ક વૈગાવવર્ષો

દાવાથી તેમના જૈન માતુ વર્ગમાં અને ત્રાવ પ્રદેગ્યમાં પહે સમાવેત થતા નથી જૈન શનાયસૃત્રિ વિજે પાસે જો તેઓ જનવસતુ સનિ ત્ર હત્ત્વે તે! તે જૈન થા શકે તે વિનાતે જૈન ક્ટેવપ નર્દા ર્વતવર્ષ કિતે તે જૈતોના આદન પુરા નથી અને અન્યવર્ધીઓ નાન્તિન

ન્યા કે કરિત તેમતે ામે તેવા માતે તેમા ન્યમારે નહી માધ્ય નથી ગ તી.)

ન્યમાં જેન માત્રુએનું તો ડાં^ર પાત્રવતારી અવ ની પણ મરાગરી ગી

શક નર્ડા અને જેન મની બદાની અપે શાએ અવિ નિશાનની પાન ત્રરાયરી 7 તક નવ ગાધી ગ લાતના ત્યા તરીક ઈવરને માને છે અને જૈનો જમન્ અના નિત્રથી 3 એમ જૈન પ્રાસ્ત્રેપના આ 117 માને

રે તૈયો દેતા? ધર્મ પરવે જૈતોની અને ગા**નીની શ્રદ્ધા મિત્ર મિ**જ

-ડુવાયી જતાે ગાંતીજીને જેત માનતા નથી અને ગાતી.૭ પોતાને જેન ત્ત⁹⁷ માનવા ૫ ગુ નથી તે પોતાને તારસુદાર મૃત્યમાં તરીકે માનતા નની

(25) अभेह हो। ३० वन्त्री अवश्र है। हिंह अनुष्टि वार्तान विस्त कोरे आ ने तेथी बनी तेभने ता भूतर आती द्याना नार ब्देनी तो सिक्षा तीयान्त्रीने निश्चवनना अवशन् २५४ ब्दर्भनना तास्त्र हार भाग छ जारे जाएगा है तथा है अहे तहिन तहिन्द्रार अने छ अने तीयः अनिनी ज्यान ने नभाष्यं वन आहे छ पे.न.न तात्री पर करी चारहा वाहाला की तत्र भारताने या रेन भनना नधी अभ हैरनतल्याधी जिल बार छ आपीछ येने तत्र बरुतात्र 0 हे व अवा आन्तात्री-वर्धे धर्मेगा पत्री हैं। મુના માત્રા અન્યરાગીઓ કહે ! તેલ આ ઉત્તે માર્ની મન્યના વિદ न्ते भाषीर नी भाजनानी कारि भाषा इरनसान्धाना जाधारे भीता के ह गात्री क्षेत्र आज भावामा पदा तडानापा च्या १३वामा अरात्रत छ ज्ञाम भास मान मान ने ब्लड्डमा बरणा स नारी वारी तीचा हते भाभ भाषाना निष्ध भारे एक विशासी धर्मा करते ते। अध्यन માનવામાં તરિત્રવન જોઇ લુજી કાલ ભાવા નાલું જો ધન જામ ભ તે કે ત્રાનવામાં તરિત્રવન જોઇ લુજી કાલ ભાવા નાલ જામ માને જ્યાન ભાવો માને જ્યાન ભાવો માને જ્યાન ભાવો માને જ્યાન ભાવો મ मा पना पुरा पुरा है से हिंद है। तह है से साम के लिए हैं से प्राप्त के लिए हैं से प्राप्त के लिए हैं से प्राप्त SI WAY SASI WE THINNIN SHARE EETAN SHEETS SAN WARN त्य आपी है तह झुना अंतिश मूट अम्म से बहु हुन में हुई पी अनुस् सम्मान giangly say ground and the property of section of sections. Ashiril tale of gall to tall to the state active and the state and the state and the state active तथा भागानाती अभोना निषद्धी थ । परे अन्ते तथी सुम ોરે તેમને માને નળ કરવાઈ અનુમાન હપર પ્રેનોર્મ ન્યાને છ त दूपराभी सारकार कार्य है भार आवार है के कुलाक कुर्यात्रम ती पृष्ट्य अवसाम इ.स. नथी तेकी असीह ने बेरनन्यामी वस र

તેઓની વાત મન્ય મનાવી નથી ગાનીજી વગેરે વૈચ્યુવા અમને-કંટનેને તેમના જેવા ન ગણે અને અમને નાસ્તિન્ કદ્દે તેથી અમને હરયત નથી ફ્રમ્પ દરેક ધર્મવાળાઓ પરસ્પર એમ્ બીજાની માથે ભૈતી સુધેડમ પથી વર્ષે અને દેતનાયમને અનુમતાથી ધર્મનાયમ્ ન માની યે અને સ્વાર્ગિ દેશ

મમાં ત્રિત ધર્માની માન્યનાવાળા નાચે ઝંત્રે કા કગવ તે સાર્ધ્ય જેથી હિતુ ભાની સુધરે ગાની ગ વૈષ્ણત છે છતા તે તે તેની ધમની ભાયતમાં પાતાના ધર્મગુર તગીર માનતા નથી તેથી તેમના અન્પરાગી યતેના અનુયાષીઓ કે જે જૈતાર્મી વગેરે ધર્માઓ છે તથા ગષ્ટ્રગા ળાના વિદ્યાર્થીએ છે તેઓના પર ગાની ગના નગ્રસપણાની અમર થાન 9 અને તેથી તેઓ ધર્મશુ^રઓના ડ્રમ્મન નાસ્ત્રિ બને છે અને તેઓ ધર્મન પ્રાચીન સ્વરાજ્ય ખુએ ૭ અને બાલના સ્વર્વશાજ્યને પણ પ્રાપ્ત ગી શ વાતા નથી અરાજ્યની નીતચાત કરતાગએ!મા અતેક પશ્ પડી ગયા છે. ગા*ન*િકો નાષ્ટેરપણ હસત્રતાતુના સ્વનજ્યપક્ષ માેડરેટાના પત એનીમેમન્ટના પથ એમ અનેષ્યામાં પડી ગતા છે. રાજકીત તામનમાં ગાનીજી ધર્મની ભાષન હુંસાડીતે હિંદુ મુખ્યાનન નોંધ્ય ધરવા ધારે ઠેતે અધો ત્ર્યા છે તેથી તેાળ તેના ક્લેળ વી ઠે અસન વ ગાધી એ પાતાની હિમાલય જેવડી બધા પાતે કમત કરી કે તેથી તે નજળીય બાયતમાં પણ તે શિખાઉ નિવાર્થી છે. રાજકીય ની ત્યાતાથી તામિષ્ ળાયતા જુવા રાખની જોઇએ ને ભાયતમાં વિતકનું મતવ્ય ધેન હતું જેતા ભે સ્વર્ગજ્યની ધૂનમાં અને સુ**નારાની વૃતમાં જૈનશાઓને અને** ગુરૂઓને જ્યાપી નાશ્તિન ભાશે તાે તેઓ ધમનુ મત્ય ગ્વગજ્ય ખાઇ બેમનાના અને ધમને હારી જવાથી બાહારાજ્યની સ્વન તનાથી પણ ખરૂ સુખ વ્યને હાતિ પામને નહીં

પ્રેગ—સાતપુર અલ્પનીનના ચોપાનીયામાં લખે છે કે જેએ ગાંધીજીની બાતા માનતા નથી તે હતો. લીમહા વિ. પ્રસ્તુની આવાની બાત્ર નિરુ કરે છે. ગાંધીને તાનવાહાર તરીક જે જેતા માનતા નથી તેઓ ગાંધીજીને ઓળખના નથી હત્યાર અના જેન્દ્રામાના આધારે શે. પુનામાં છે? જ્યાર—જેનાભમાં જેના માના માત્ર કેતા હતાય છે કે ગાંધીજી ત્યાર નથી જે અત્ક્રેલ શેકા રહિત કેનાના દિવા છે પીનશા દેખ છે અને ગાંધન કન દિના પાત્રોને અને મન મુખ્ય વગેરીના મનતે અને આત્માં એને દાયમા રહેના આખતાની પેકે હતાનું છે તે તીધકર મનવ તાલ્યું ૧૪ એ વાર્યામાં ત્યાર કેના નથી હતા કે ત્યાર આવ્યાં ત્રેમાં ત્યાર મેં વાર્યામાં ત્યાર કેના નથી હતા માત્ર પ્રત્યાન પ્રત્યાન ત્યાર પ્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રાપ્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રિયાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પાત ત્યાર પ્રત્યાન ત્યાર પાત્ય પ્યાય પ્યાન ત્યાર પ્યાય પ્યાન પ્રત્

ે તેથી જૈનમખ્યાના વ્યાધારે ગામી કેવનતાની કરતા નથી ખન પનનતાની તથા ગાધનાની પણ દરના નથી તેમજ જૈનામમાં શાએ ની પૂર્ય ત્રાન અનાવે સમતિની તથા ગુનનાની પણ કરતા નથી, અને ને ર્વનશાસ્ત્ર ત્યના માત્ર સાત્ર તથા તાવર પણ રસ્તા નથી પ્રભુ મહારી? મ્યામીના વખનમા ધનુ મળાીતના જદાતાનુ **અભાડતાપસ હ**ના તેના નવાિ યમાતે પાળના હતા તા પણ તેને તમુએ શ્રમણમાંધુ તરી? મા તે તમ એમ જનમાનોમાં જણ 1 3 તે પ્રમાણે વિચારી જોવા ગાંધી તારા | દાગ્તા શુ થયુ જન વ્યવતાગ્નયપ્રમાણે જૈન પણ કરે નર્નો ने। पड़ी तेमनी आजाते करें। धमनी आयनमा भानी शह नहीं ते ંવા જ 3 પ્રત્યાત્મજવાતિ શયત છા વચા ધ્વનવાનના આભ્યાનજ એવા અથ ધરનારાઓનુ સાનવિષ્યાથી જનામમાન વ્યાવારે ખડન ધ્યું છે. ગાપીજીની ગુજ્યાં પ્રાથતિમાં ઝુજ્ય જૈતનાતે ચેલ્ય લાગે ના ભાગ લે પત એાડરેટ પક્ષાદિગમે તે પક્ષમા બાગ લે અને જન્મમમા જૈતોને એ દગા પ્રમાણે રાજકીય વાયતમાં ભાગ તેના અમારા જૈતશા સ્ત્રોની તથા અમારી મનાઈ નથી પણ જૈતગાસ્ત્રથી વિરદ્ધ ગાંધીજીની તેા

સાબળવા પ્રમાણે એની ભાનના છે કે જૈન સાતુઓ-મન્યાસીઓ-બાનાઓ - ૬૫/રા-ત્યાગીઓ જે રેંડીએ કાતે તેા ન સાગ્ ગાધીછના નિયારા રશિયાના મહાત્મા ગુજરાયના અનુ-રણના અમુખ્બાગ તરી કે છે. મહાતમા ઉદસ્ટાય આઇબસમા લખેલુ નરુ છેજ નહી એની પ્રશ્પળા કરી છે, કારણ કે પ્રભુ ક્યાં 3 પ્રેમી કે તે છવાને દુ ખ આપવા નરક રચે નહીં ન્યા ગામતમા ગા રીછતી માં પતા તેની છે કે ટ્રેમ ? તે તેમના ખુનામાંથી મમછ ગમય ગાવી ગંભાય-મમાઇએની સાથે ચર્ચાના મૂલમુ ાના સત્તર્ગ જણાવે છે કે કાેંકાઇપણ વર્મમાં મનુષ્ય સર્વફા વધા નથી, મનુ યાર્મ જણાવે છે તેથી સત્ય અને અસત્ય બન્નેથી મિશ્રમાસ્ત્ર હોય છે તેથી કાઈ ત્રર્મમાં પરિપૂર્દ સત્ય કહેનાયુ નથી આનજ બાવાયને તે જ્યાવે છે, પણ જૈનશાત્રા તા એમ જણાવે છે ક મતુષ્ય પરમાતમાં સર્વદા બંતે છે ચારીશ લીર્યપરા સર્વત દેવા થયા. અને તેઓએ સપૂર્ણ સત્ય પ્રત્નસ્ય છે તેથી મર્વત મહાનીર વગેરે તીર્થેષ્ટરાની માન્યતાથી ગાધીંંંગની મા નવા નિષરીત અસસ હાવાથી ગાધી જૈન કરતા નથી પણ મિથ્યાતી કર છે અને ધર્મની બામતમા તથા જૈનશાસ્ત્ર નિકહ એવી તેમની માન્યતાઓને સત્ય >નીખરી ક્ષેનાર અન્ધદૃતિ તુગીએનુ કહેવુ અસલ માનવુ અને ગાનિજીની જેનધમ વિરુદ્ધ આતાએતે માનવામાં જૈતોને મદામિથ્યાત લાગે છે અને પ્રભુ મહાની રદેવની આદાના વિરાધમ્પણાના દોષ લાગે છે ઇત્યાદિ ગીનાર્થ ગુરૂગમથી सम् सेन

પ્રત્ર—જ્ઞાતપુત્ર મહાની-નામના ચાપાનિયામા પ્રભુતે ઘરેણ આળ્યુરણે ચયવવા સભાધીમા ગીમ ચર્ચા કરી છે તે ગનધી ગે જીતાસા આપા છે કે



ન્તા મતું પોતું ટાં છે એક થયું કે ગામ ત્યા ઢેડના. જેવું કંઇને ટ ડિ દ્વેષ ઝેજ, તેથી ચર્ચા ત્રસ્તાતાઓએ ત્વાચું કે તેમાં પોતાની સમજ ફેર શાય છે અને તેથી ત્રિનામદ્રએ જેન્નસમત્ત્રને ભૂશે રીતે ત્ત્રમ પડાનવામાં આવે છે જેનાના દેશમરા અને ઉપાબરો પતિ-ચ્યાતા છે હતા માં આપ્યા નામ માદ્ધીયું કંઇ મેઇને દોય બનાવે તો તૈયી મત્તે ત્યાપીઓને છું કથી બ્રેબ્રિંગ સાબની જૈન્યમ ઉપર્પૂર્ણ બહા હતી તેની આપળ ગ્લે માદ્દા પોગળ જાણાતના ક્ય લીડુ અતે

માં વીતું ખરાબ દૂધ લીધું તો પહું લેખિક રાજ્યએ જ્યાંન્યું કે તમારા દર્મના હત્યથી તમારી એની દયા થઈ છે તેથી અન્યમાનું અં અને સા નાં કોંગા કે તમારા જેવા નથી, તેની સાતું વર્ગ ઉપરથી મારી અં હિ તમારા જેવા તથી, તેની સાતું વર્ગ ઉપરથી મારી અં સદા શે દિ તમારા અં સેબ્લિક રાજ્યને હાર વનેર આપ્યું આતામાર્થી છતો તો દુર્ગ હતું દ્વાચારાતું સ્વધ્ય અત્રાત્સાર્થી છતા તેને અં કોંગ હતું હતા તથી, એમ પ્રભુ મહાનીરના અભ્યા ભણાવે છે જે આપ સુધે છે તે માન રહે છે તો પણ દુનિયાને અમર થાય છે, જેનામ દેઇને નિદા કે છે તે મોનો પાપી મના છે માટે આત્રાત્માર્થી જેનો તો જેનમાં જોના તો જેનમાં જોના આ માટે આત્રાન્ય માળ્યું કેરે છે પ્રથમ મન્દન પત્ની રહતી હતા તમાની અને માના સ્તિ ખની રહતી હતા.

નથી ળહુ તાે બહુ ળહુ સત્તત્ત બની શકે છે તથા કેટલા બાતે છે કે પ્રેત્રુ મહાની? ધ્યાહાસાની માથે બળવા ત્ર્યો તેના શા ખુનાસા છે ? ઉત્તર—જૈનશાઓની માન્યતા છે કે મનુષ્ય સગદેપાદિ કર્મને સપ મ્રીને સર્વત્ત વીતરાય થઇ શેટ છે જૈમીનીઆદિ યીમામણ મનપ્ય સવત થતા નથી અને ધેડિજગતુકતા કલર નથી અને તે સર્વદ નથી એમ માને છે જૈના તેરી માન્યતાને સ્વીધરના નથી પ્રભુ મહારીરદેવે નવન અસ્દિત થઈને સમવગરણમાં બેગીને જે મતુષ્યા વગેરે સામળવા આવા નેઓને ઉપ શ દીના અને તેઓએ જૈત્વર્ધ્ય અગીધર કર્યો શ્રીમહાવીર ત્રાના પરેની પણ પાલનાથના સમતમા ચારે વધાના મનાના જૈનધમ पाणना दना अने हेरनाइ जन्मध्येने पाणना दना तेथा लेखीने ले

્રે મે ધમ પાંધ પ્રભ મહાનીરદેવે જૈનધમના ઉપદેશ મ્યાપ્તા હતા, नेभने दानमा राज्ये। वर्गरेमा प्रलब्धा शत्याकायी परावे। इरे छ तेनी ઉપમા આપી શકાયત્ર નહીં કેટનાક સમ્તિ બનેના જૈના પ્રત મહાનીર માતે ત્રી મા વનાયની પરે તાના ત્રીયકરાને ક પત હતા કરેલા માને છે

પણ એવી માન્યતાવાળાઓ રે જૈન રમના હતિદાસપર શકા ન હોવાંથી માને લાત થય છે અને અ તેને નારિતા કરી એડડા જૈતાની તિરાદ એવો અવસ્થા કરે છે જ્યા ગુધી જેઓ જૈનસાઓના પૂરા પારગામી થા નથી ત્યા તાવી તેઓએ જે જે ડહાઓ પડે તેના પ્યનાસો મેળવતા "તનશાએ વૉરેતા પૂર્ણ અલ્યામ તરવા અને ગાતાર્થ ાશ્માને પુંત્ર અનવધાનને દિવહાસ એમ્ડમ અવધિમાદિ શાન

શ્ર્યા વિના નજી શામ્ય નહીં માટે પ્રથમશાજાના અલ્યામ સારી કાંતે કરવા - જેથી કાનાવર કેટના ખુનામા મહેજે આપાંચ્યાય થઇ જાય છે. પ્રત-- 3/11 કહે છે કે તાનજય-સિદ્ધાચન લીચ છે તે પાછળથી શ્રમ છ અને તી ર્યનિયન સવન દેમચા સાથ પણ પાતાના બખેત ગ્રન્થમા નિદાસ પર નીર્ધકરા અન્યા હતા એક જણાવના નથી તે સગકી

માં ખનાના છે ર દાનના સત્રજય મહાત્મ્ય ત્રન્થ છે તે પ્રાય કપિત

3 એમ માઈએ પ્રસાનત્વ મામિકમા લખા 1 છે તેને દેમ ? ઉત્તર—શ્રી દેખમ મ્યાર્થે સ્વરચિવિતિ શિતાબ પ્રસ્થિતિ સ શમા

શ્રી તપમદેવ પ્રસ શ્રી સિદાચન પર્વતપર પવાર્યા તથા ત્યા પુડરીક ગથ્યુ ધર પધાર્યા તથા પુડરગિરિ નામની સ્થાપના વગેરેનુ વર્ણન કર્યું છે શ્રી ટેમચદ્રાચાર્યની પૂર્વે પણ શત્રુજય ડુગર તીર્થ તરીકે મનાતા હતા. ભર તમાનુએ મિહાચનના સઘ કહાડ્રી હતા વિક્રમરાન્નએ શ્રી સિહમેન સુરિના ઉપદેશથી સિહાચનના મધ મ્હાડયા હતા. મળસત વિપાકમા પણ जायसत्त्रज्ञये सिद्धे इसाहि पाइ 3 दिगगरी पशु प्रान्धीन प्रराशीना આધારે મિદ્રાચનને તીર્ધ માને છે જાવડશાહે શત્રુજયના ઉદ્દાર કરી દતા એમ પ્રાચીનપુસ્તકાથી મિદ્દ થાય છે હેમચડાચાયની પૂતના મિહાયતપર દેરામગ હતા. તેની કમારપાને અને ત્રી હેમચદ્રાચાર્ય સ્ત વના યાતા ધરી છે. તેથી મિદાયત પ્રાચીન લીર્ય છે એમ સિદ થાત છે અને શ્રી હેમચાચાર્ય હિ પૂર્વે શત્રુજય કેપ વગેરે પ્રાચીન બ્રન્યા હતા એમ भिद्य थाप छे। जाता भून तथा व्यतगढ हनागभूनमा जाच सेन्नजये સિકા ઈત્યાદિ મિદાયત વીર્યના પ્રમાણો છે ^{કે}ટનાક કડે છે કે શત્રજય માહાત્મ્યથન્થ, વ્યાધુનિક ચઉદમા પન્નરમાં સૈક પછીના છે. તેમા કેટનાક પાશ્રાત્ય વિદ્વાનાનું અનુષ્ટણ કરનારા કહે છે કે પન્નરમા સાળમાં ર્સાગના એક પુરતકાના સચિપત્રમા ના તેજય માહાત્મ્ય મે થની નાધ નથી અમા તત્સનધી જણાતીએ એએ કે તેમની એ નેધમા તાેજનધર્મયન્યા પૈકા પણા મુ યા જોવામાં આવતા નથી. તથા એક બડારની નેધમાં જનધર્મના સર્વ યુમ્તકા તેમ છે એવા નિશ્વય છેજ નહીં, મ્લમ ખડીઆના નામા મેટલીક વખત કે/લાં, કેરકારા તે પાતાની પાતે દત્ના ભૂલી ગયા છે. તાે તેવા મ યભારતી સૂચિયત કરતા પાસે વાચવા પ્રસ્તક ખલાર ટાવાથી માપિ માયબડારની યાદીમાં ન દાખત કર્ય હોય એમ કેમ ન ખતે! પત્રમી ચા મી સદીના સર્વ જૈનગ્ર થનકારોની યાદીઓ જો મગી આવે અને મર્વ ત્નશાસ્ત્ર બહાગમાથી તેનુ નામ પછી જો ન આવે તા ત્યારે તે 3



દેવની પેંડે ગાનીજમાં સત્યા પ્રતાશવાની શક્તિ નથી, કારણ કે ગાંધીજી રાગદ્રેષ દેવરદિત થયા નથી ગ્રેજ મહાનીરદેવે સર્વ સાવવીરાનો ત્યાંગ મ્યાં હતા. અને ખારતપાસુધી ધ્યાન ધરી કેવળત્રાની થયા હતા. ગાનીજી તા ત્યાગ માર્ગ કરના નિદેકી જન્મ જેવા ગૃહસ્થાત્રમ સારા માની તેમા રદ્વેત્રાની રૂચિ ધરાવે છે પ્રજ્ઞ મહાનીર દેવ તેા સર્વ છવાના સર્ન પરિણા માને સાસાન વ્યાચના હતા અને ગાનીજીમા તા ક્રાઈ પહ મનષ્યના श्यतर्ता भावात विधाराने ब्वलवा है सन्ति प्रभग नथी तथी बैहिशमा તીર્ધમ્ર મહાનીર પ્રભુની પેડે જ્યાતરે પળ ગાંનીજી માહ્યાન સર્વ પહોંચોના મતી જાણવાની મહિત ધરાના નથી તેમણે તેમના મિતનુ શ્રીમ, તજર્ચક્ર પ્રસ્તુષ્ટ તુરુરે પુસ્તો વાચ્યા હતી તેથી તુઇ શરૂરામ િતા જૈનશાશ્રાના ત્રાની અને તેના ગઢાળ પણ કની શંધય નહીં. તેમને જૈનશાત્રામાની કેટલી- વાતા 3ચે તેથી કઈ જૈન પણ કહેવાય નહીં તેમના નીનિના આચારા સારા ટાય, તેમ 11 પેંકે તા પ્રીસ્તી સુમનમાંના પૈકી કેટલાકના સારા નીનિનાળા ત્યાચાંગ હોય તેથી તે જૈનધર્મી गणाप नहीं अने तेथी तेवा ता संयनीतिनी प्रशत्ति भात्रथी प्रभु भ દાનીરની પેંકે રૂપાતર અત્યના પ્રાગમ્પ સાવે હેનાય નહીં આપણે જૈના, ગાંધી ૭ વગેરે સવ મનવ્યા માથે શહ પ્રેમથી મેની સખી શળોએ પણ તેમના વિચારા છે તે પ્રત મહાવીરના મત્યા છે એમ ધ્રાપિ માની શાપોએ નહીં પ્રભુ મહાવીરદેવની પત્રપરામા આજસુધી અને ત્યામી વૈરામી પચ મડાવન નારી અનેક શુળી આવ્યો ઉપાધ્યાયા, માતુઓ અને સાધ્વીએ! યાં છે અને દાન વિશ્વાન છે તેઓએ જ પ્રભ્ર મહારીર દેવના સત્યાને પ્રયક્ષ્યા છે અને હાન પ્રયાગે છે તેમના અનુયાયી જેના જ પ્રસ મહા

વીરના સત્યાને જૈનશાઆનુસારે પ્રધાવી તકે છે. તેથી કપાવરે ખીજા

ગરાવ છે. અને ગામીરુની મળવળ પુષ્ટી હિંદુ ધુમ માનના ઝાધુ પંચા વનવા (30) લાગા છે દેશની દિલ્સ મેઇ મને હિંદુ અને સેલ મનિની સેન્યા सिंह यह नथी अने यसनी नथी जिल्हा अमिन्सिन्सना जाहेनसम्मरी લ મું કાનમાં લ તુંદરાતિ અળવાર્ગ કહે જોમ બામ છે આમે બામાં તેલ धर्म । हिल्ला वा तेमा को ना न नाती श्रम राज्य हिल्ला वा नेती ભાવગ્લાય _{જોગ્ગ}રુના દોના દો અ તે મ ઉત્તર વ્યત્નાલ જી મ મનાલી वानी धार्मिक व्यक्तनीतिसीन-वश्याची संधीने वर्गे ते ती स्थार्थी संबंध हाजाहा अन्तर्भ कार्च है। कुन्न वाडनाड चना कर १३ सम्बन्ध हिन्दिन हुइइ होती आपी पूजे हुट प्रांची अपने मेजन आपीची क्रांत्रणा-क्रांत्रसारी हुइइ होती आपी पूजे हुट प्रांची अपने मंत्रचार के जा कर् कारी अभी कार्य की कार्य त्र भरी कामती कामी हिमानी नहीं तक हिट्टी कार्य क्षम भागा ता गणा ६०का अपनि सारे व काम निक्त तो पश्च तथा of y that the establishment of the state of अपरीपी अन्य प्रकार वर्ष अपरीपी अपरीपी अपरीपी अपरीपी अपरीपी व्यक्त मार्थी तथा हान संधी ता तेजा हिंदू अस्तीम रामती केंद्रेश केरतार के हैं जिल्ला है जिल्ला के जिल्ला के जिल्ला केरतार के जिल्ला केरतार केरतार केरतार केरतार केरतार भारती माठी छ पु भरे पु और हि औ भारत गाम का मा हता है. ते कोने ये तीने केश हिंह डेन्सर्य कार्य युर्व कर्ती कर्ता नामक व्यापन कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्त मान जी में मानीसी मीजियजीसी (पत्र का एवं के मानिस मन अंत्र रेबानी दीनवान शह रेड्डी क्लेक्स वार्टिक के एक का कर के का कर के अपने स्वी તમા માને મારવાની બધી કરાતી જ્યાન ક ઝન મે જ બ ક નથી તેવા मुन्ताम् सम्प्रास्ताम् सम्प्राम् । कृताम् सम्प्रमासः हो। सम्प्रमानम् सम्प्राम्यम् सम्प्रमानम् । व्यापः चार्यः । व्यापः चार्यः । व्यापः चार्यः । व्यापः चार्यः । व्यापः द्विती केंद्र नहीं। कोर्ड सभव से कवती वावना कार्ज नहीं बच्ची प्रवित्ता स्वता तो ज्यों सार्वाची तथा हेटानेनाची ३३ वेथ भाषी नगेरे एवा उरे

છે માટે ગાવીજીના મહિયા ગાતને ધમગૂરુઓની દીનતા દેખાડના પ્રયતન પર્વા તે જ દેશની ધમની પ્રમતિમા નિ ન નાખના જેવું કાર્ય છે. અધ **પર જેવા થા શા**ડે હિંદુ મુસ માનની એકતા કરનાની ચળનળ ચનાની હતી. કબીરે પણ બન્ને કામની ધર્મથી એકતા કરતાની પ્રતિત સેની હતી પણ થઈ નહીં દેશનેતાએ! અનેશ્પક્ષરપી ગર્રહામા-મનામા વ્હેંચાઇ મયા છે અને તેઓ એમ્ થઈ શમ્તા નથી તો કોડો હિંદુઓનુ અને યુસ'નાનાતું એક સાધ્ય મહા મુસ્ટા છે માટે સ્વરાજ્યની ચળવળમા થી ધર્મની ભામતાને દૂર કરી પ્રનતવામાં જ ઓછા ઝનડાના પ્રસંગ રહેશે ભાને નમો વારવાર પરસ્પર લડે અને વારવાર સુનેહ સપ કરે એમ હિંદુ કુમ'માં તેમાં થયા -ગ્ગાનુ જ ગાગી *૭* ભાતેની એન્સ પી _કાપિકરાવે તે! તેથી પણ જત ત્યાર્ગી મુનિ કર્મગુરૂ-માના કરતા તેઓ મહાન્ યની શકે નહીં અને તેમને ન્યાળી કુનિના નખાણે માને તે! પણ તે રાગદ્રેય રહિત નીતરાગ થયા નિના તે કેટના જૈનની માન્યતાવાળા તીર્થ ર જિનતાત્ર્યાટાર બની શક નહી તેમણે સાસારિ પ્રવૃત્તિના ત્યાગ મ્યેર્કે ાથી, રાની બાજનના ત્યાગ કયા હાય ના કહ્મળના ત્યાંગ કર્યા હોન વા ત્રાચા પાણી કે પીનાના તથા કાચા પાણીમાં ન્હાવા કા ત્યાંગ મોં કેલ્ય, તા ખેતી વગેરે ધધાના ત્યાગ કરા હોય વા તત્રતા રધાનાના ત્યાંગ ધ્રો દેવન એક વ્યમાંગ જાણુનામાં નથી તથા જેન દેવદશન કરવા જતા દેય વા માંડુ ગત કરના જતા હોય એનુ પણ જાણનામા નથી તેથી તૈમના ખુતામાં નિના તેમના જૈન ત્યાગની ખત્મર પડે નહીં તે નવ્ય નાચાયના મેપ્રતથી તેવાન દેવય તે દીતા કરે તે પણ સમજાત નથી તે વેપક્રિયા િના ડહોલી મળાન છે એમ ન્દ્રીએ તો નેથી પણ ત્યાગીત્રમશ રએતા કરત, મુત્રાન નથી પરદેતી કુલુઓને તે સર્વથા વાપરતા નથી પ્રેમ મ્યુ મિત્ર થઇ નથી તે માેટરગાડી ત વેમા ગેસે છે, પરદર્તી પ્રેમના ઉપયોગ કરે 🦻 દેતી કાગગા વાપગ્તા હોય એવો તેમના નિયમ નથી

સાનરમની સત્યાપ્રહાત્રમના મધાનામાં પરદેશી. વસ્તુંએક માતુમ પડે છે. રંગ પણ પરદેશી ટાય છે પરદેશી તાળા ઢાય 🖟 વ્યવ્સા પરદેશી હાય છે, માર્ધાજીએ ડાંધ્રેરોની મત્તથી તનિયત સુધારી હતી અગ્રેજ પુસ્તમ વાપરે છે એકની ખાદી વાપરી અને ઘણાખરા તા પરદેતી ફાનમ વગેરે વસ્તુઓના ઉપનાગ થાય તેથી ક્રઇ પરદેશી વસ્તુના ત્નાગના ન્માદર્શ ત્યાગ તરીકે પગુ માધીછ મહાન્ મણાય નહીં તેથી જૈનધમની દરિએ ત્યામી

સાંધુ આચારા કરતા ગાયીજી ધમની બાયનમા મનન માની શકાના નથી. પ્રમ----- શક્તિ જૈના કહે છે કે પ્રનુ મહારીરદેવે ધ્યાદતરો ની સત્તાના જૂ મચી મ્યાગીને દીક્ષા લીધી હતી તેનું કેમ ! ઉત્તર--એવા શબ્તિ જૈતા કપાન કવિત્રમાન પુરાણના મળ્યા ઉડા વનારા છે મત્યું કે તે કેટનાક પાંચાત્મ વિદ્યાના જૂઘ અનુમાનના તરેગાપર

રાવે હે તેઓ કઈ શાખના પ્રસંત્રો આપી શકતા નથી. પ્રભુએ તા આ મ ધ્યાન ધરી દેવનગ્રાન પ્રચગવવાને દીસા નીધી હતી હાદારા તે તેવખતે તેમની પ્રસાશ કરતા હતા અને યુન ખાનીર લીધકર શે જયનના ઉદ્ધાર કર वाना छ क्षेत्र काशना छना नातना धन्हारीते अने कीनाते हेणा ते

વખનના ષ્યાલગોના જમાના કરપી જાલ વિચારા દેશ હવા એ મન્ય જૈનને सक्षक्ष नथी

नभ---भरीविके तिऽति। वेर धारख हो। तेचे सपभद्देव पार्ने સાર્ડુઓ કરવાને મતુ તે મેહકલા હવુ જ્યારે તે માદે પડી ત્યારે તેને

મેઇ સધ્યુંએ સેના કરી નહીં અને તાવકાએ પણ સેવા કરી નહીં તેય

મરીચિએ કપિતને દક્ષિ નાહી તેમ શ્રી નકામદેવના માત્રઓએ અં શ્રાનુકાએ મુગીનિની સેવા નહીં કુરી નેથી નેએ ની અદિવેકના ગુણપ કે નહીં

ઉત્તર--ની તડામદંવ વીતગય મવત હતા તેથો તે મગીયની મે

ધ્રે નહીં સાડાંમા પણ મરીચિથી યાગ ગહેતા હતા અને વિદાર ધરતા હ

વર્ષ્કું છર વેયાચાર સ્થાપેયા તેથી સધને તે ગમ્યુ નહીં, સાનું આ વગેરે તેયા તેમની પાસે રહી સેવા કરી શમ્ નહીં તેમ જ તેઓને દૂર રહે વાયા બરીચિની માન્ગીની ખનર પણુ ન તેથ તથા મરીચિંગે સેના મ્યારવા બાટે મામળી ન કરી તેય નથા મરીચિ વનમા સ્ટેના હતા

અને તેમને આહારપાણી લાની આપવા તે ના સહ્યુ જેવાનું કાર્ય દેાય છે તૈથી મુક્ત્ર્ય જેના આહાર વહેારાની શકે પણ બીક્ષા માગીને તાવી ન આપી શકે, તેથી તેમા આવેમના અવિવેષ્ મણાય નહીં તે વખતના માધુઓ અને બાવકા ઋજા-મરન અને જડ હતા અને પ્રસ મડાવીરના માંયુએ વક અને જડ કે તેથી તરવબદેવના માત્રુએ જુદ વૈયાગીની ખત્રર ન ક્ષેવા જાય તેસા તેનુ પતિનપણ જણી લક્ષ્ય ન આપે તેા તૈયી ક્રઇ જૈતધર્મ શાસ્ત્રોના, સાયુઓના દાવ નથી તેમ જ પ્રભુના ઉપદેશની ખામી નથી તેથી તેની ચર્ચાના કુ અર્થ જ' નથી ^{પ્રમુ-}-હાનમા કેટલાક મુધારુ નામનાગ શબ્તિ જૈના, માર્ડુઓની ભેર ખાનગીમા ગ્રપ્ત નામે નિદા અપે ૭ છપાવે છે અને ધર્મશાસ્ત્રોમા શામ ઉપાયે છે તેન શ કારણ છે ? ઉત્તર—જૈતવર્મની બાયતમા સાત્ર વસગુરએા મુખ્ય તેય છે, ધર્મ રુ'એ! જૂધ સુધારા, વગેરે બાયનામા આડા આવે છે, નાસ્તિકાના નાસ્તિક વિચારીતું ખડત કરે છે મડમાની સાથે લગ્ન કરનાનું નિરેધ કરે છે હું મામ વાપરવાના નિર્દેષ કરે કે, બગીઆએની સાથે ખાલ નહીં એમ ઉપદેશ આપે છે તેથી વિશ્કપ્રદત્તિવાળાઓ, સાધુ ચુકના દુશ્મન ^વની મા છે અને તેમાની ઉપર જ્^{દા} આળ ચયવે છે તેઓ જાણે છે કે સાર્કુઓ રેમ્પ્રાં જવાના નથી, સૃષ્ટિનિરુદ્ધ કર્મ રનારા વગેરે કહેવાથી તેઓપર જનતા ને તમ પડે તથા એક એ શ્રાવિધઍલની સાથે વાના

ભાવની મ્ટ્રેમીય નિંદક ક્ષેળીઓ ઉની થઈ દે અને તે ફરિયન ત્રાે,રોનિય જેવી અન્યુપીરિ સક છે અને બદાચ્ચી અહિસાના મિહાન જણાવે છે તેઓ

નાતળત ધમ વગેરના માગાના નાળ કરવા ઇ કે છે એવા દેટનાક ગાંધી જીના ટાળમાં લવે કે એવા _નાંખી નાખ્તિમ લતી ઘણા વાચાળ અને કુતકેમ ટાવ છે કે જેઓની આગળ કરના બાળા વિતાન જૈતા દારી પણ જાર તથી તૈરાઓના વિચારના વિધાય ન ગખવા જિનેષર ભગવાનની પ્રતિમાને વસાન રહ્યા મન્તરવાના જૈનશાસામા પાંદ છે માધુઓ વનાકઓ અત્વા માંચાવા માર પર એમાં વ્યાપના 1 વચે છે તેમા ચત્ર વા પૂરીયા વગેરેથી સત્તી તેમા બહ્નિ કરવામા ત્રર પ્રવેશ મેટોતમત્ર વગેરેના જેઓ વાધા તેતા નથી તેઓએ વીનરાગ દેવની પ્રતિમાની અક્તિ ધ્_{રનામા} વાસે તેના પેલાના ન્યામ ઘૈરાબ્ય ઉપર લલ દેવ જોતએ જન ધમતના સાત્ર સરિયા વીરેન રહામાં પ્રતિ પરિમા પે અને જનતાનામા તમ વિરાય મર અને શરૂઓની નિદ કરે તેથી કર્ડ ધખ રહાવ્યુરોએ હરી જે તે એસી જાય નહીં વિચાર બેંદે વરી ુગ્યનાએ બના બનાની નિદા કરી છે અરવિદ નાત વગેર देश नावधनी रहामा परेनाक्वाक नेरी युव छ दि छ दीन क्रान्योगमा મતારમા લામીટની નિદા જ રાહ કરવામાં ન્યારી કે નેથી ગામીજીને ક ઈ 6ર ૧ નવી પ્રતિષ શિદિમાંએ વ્યાત્ર સુધીના મહાપુરો દી સ્ટામે ધૂા દાંગ છે જૈનાઓ સાતુઓના પ્રતિપક્ષી બનેના નિદ્ધાએ આજ મુની सन्य रहाने धूर ह हता केरी धुवी प्रचित्त सेरी छे अने तेथी तेजी ત્યાયા તથી અને તેઓએ પાતાનુ મથ કર્ડ છે પ્રતિપૃતા વિરાધીઓ કાચ ધમ_{ી ર}એકને ગારી નાખવા તુધીના તઘ્ટા યાલુત્રા રૂચે અને તેથી ધમ રમુગ મરી જતા પણ કંઈસત્યધર્મ વિચારાના ત્યાગ કરતા નથી અમાએ માનું નામ દહીને પ્રત્યત્તર લખ્યા નથી હમ્ત ઉપર્શ્વમત વિચારાથી તેના પ્રનિપક્ષી તિચારાના જવાન આપ્યા કે એમાથી મન્પસ્થમત્યગ્રાહ છે જે નિયાર કરશે તે! તેમાથી તેઓ ઘણ લેનાનુ મળતો ગાનીછ, નિત^ક, તમના મુ વગેરે દેશ નાય નેના દેશ નાયમ્ત સામે અમારે વિરાય નથી પહ યાના લા~પતરાય વગેરે કે જેઓ જૈન ધર્મ **તીર્થ**મ્ટ વગેરે સ્મધી નિકહ વિચારા જટ્ટર ધરે છે. તેઓના તો ઉત્તર આપવા જેઇએ જાતપુર મહા વીન્યા અંગે ગાંધી ભાને જે નિયાંગ છપા યા હતા તેમાં પ્રસંગે ગાંધી 🤈 મનધી અમારા વિચારાને જૈનગાઆવાર જાહેર કર્યા. તેમા ગાનીજના અગત ચારિત સબધમા અમે ઉતયાં નથી, અય ધર્મી સનનોધર્મા હ ગાનીંંં ત્રે પ્રથમ નગરના ઉત્તમ ભગ્ત લાઉં મહાત્યા તરી? માત્ર છુ તે ખગ રામમત છે પણ જૈનામંદિએ તે જૈય મહાત્મા નની એવાે મા**રા** અગતનિચાર છે. ગાની⊃ વગેરે દેશનાય>ા આવે રાજ્ય જો દેશરાજકીય ચળતળમાં ભાગ લ તેમાં અમારા વાતા ાથી પયુ તે 🛭 માથે અમારા લીર્થકંગની અને 📭ઓની ધ્લામા ગાનીઝર્ત મુક્ષી માડુ શુરુઓ રહામે પડનારા ગાની વોરે દેતનાયમના અ વ દરિ રાખી નામ્તિષ્થ હતર્જના પ્રતિ તેમની ચચાના જવાય છે અતે ભવિત્રમાં તેઓ આ લેખના હત્તર આપે તા તેના તામાં છત્તા સુધી જવાય આપવા તૈયાર સ્તીશ જેનાએ ધર્મપરિનર્તનમહાયુદના મકાન્તિનુગમા જૈનગાસાને ઉડાવનારાઓના નિશ્વાન ન કરતા અને તે`ોાના ઉત્સત નિચાંગ મામે વિરાય જાટેર કરવા જો**ં**એ જૈતોએ ગાતીરિંગ્ માનસિંગ્ ધાર્મિંગ ગ્ળવાડીનુ ક્લિપ્ય લેતુ અને જૈનાચાના ઉપદેશાનુસારે વર્તનુ જૈનધમ માટે જૈનેતર ધર્માઓ કે છે મામાન્ય અહિસાદર્ગાવતા ટાનતેઓના વર્માબકત ન થતુ દિુઓના

केचा इंटर विकासभारे भवाता व्यनीने क्यासाधानी सस भागे। हरीही ्रितं अपूर्धा वसाना है कुनी योत्र व्योगी कुसमासम्बद्धांत्रीत्री वित्री अञ्जा । सत्र आठ अतात स्वर्णात सहित्रीचा चाहानी साह तहस्त्र वित्री अञ्जा । सत्र आठ अतात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स्वर्णात स એન સંવતો પણ નોરા વધે માટે વર્ષણ એની સેવામક્તિ કરીને શાસોના भारती करनियमें। विश्वासम्। भूनार करेंगे क्लेक्स

ત્રમ—જમારા પેલાના મહાના માધીજ માટે સાં વ્યનિયાપ છે अपने अवस्था आधी हिंद असे तभावनी क्रोभ्ता हुई छ तथा हेडल गीन ्रेश्वर शो हे तथा है गीया भारीभी प्रश्नि हुई हो केमा कमाही क्यांत्र વ્યમિયાય રો છે?

Gus—अवन्तरम् केनप्रभूती हिन्छो वेभने ह केन्स्सहरम् बा रीत नेपार्व नेपार्थ प्रश्नु हिंह देखनायहेंगा। संत्रपृत्योगा निहार ्त्रमा मुद्रमा स्टिन् अपूर्व मिलीसिंगी भूते मिलीसिंगी कार्यसम्भावाता कर्यसम्भावाता स्थापन કોઇનો તે મુત્રા મુજબ પત્ર ધરાકુ છે. જીત માલ છે. ઉદદે જીત માનના જીવાન કોઇનો તે મુત્રા મુજબ વહાકારા મહાર માન મન્યાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જીવાના જી सार्थ कार्य में सार्थ भी हैं प्रमी कार्या कार्य न्यापूर्य मार्थ सार्थ सार्थ कार्य में सार्थ भी कार्य में स्वार्थ कार्य मूल ते पिट्ट मुन्तानामा कृती में जानी मही जेले हैं। जानामा मूल ते पिट्ट मुन्तानामा कृती में जानाम मन्द्र अवस्था मार्थ हेन्याः संभीत्ती तैस्य हे कुप्तमानुत्ता रिट्ये पु स्वडर्गित्री कुप्तमा प्रतास् त्रत्य त्र तक्ष्य कार्याच्या स्वतः । त्यतः । त्यतः All ghally father and a fine of manner and a state of the second and a state of the second and a second and a

And the state of t The Real Parties of the parties of t पुरती में पत्रांत्रीयों है पत्री हमें है दे भगीओं इतरत साम कुना हमी है।

મલીનના છડશે સાત્વિકાચારવિચારમા આરહ થતો તેા હળવે હળવે તેઓ સ્પર્સ થઇ શકશે તેમની રેટિયા ખાતેની પ્રદત્તિ, અહિ માની દટિએ ઉપયોગી છે મચુ તે મરજીયાત થવી જે 🖼, વૈષ્ણુવભક્તમહાતમા ગાંધીમાં જે જે ગુણા અમને જણાય છે તેની અમા અનુમાદના કરીએ

છીએ, તે પાતાને તીર્થેષ્ટ્ર, પ્રભુ અવતાર, ત્યાગી, મહાત્યા કહેનારા તેમના અધ બક્તોને વખાડી કાઢે છે અને તેઓને જ્ય કહે છે, એની

તેમની માન્યતા છે તે સાચી છે અને એમના કહેવા પ્રમાણે અમા તેમના સનધી એવા ઉપર્યક્ત વિચાર બાધીએ છી તે તેઓ હિંદ મુખ માનાને જે એ તા નષ્ટ પ્રેમતા પાર શિખવે છે તે સારા છે બાળ જૈન શાઓના ન્યાનારે ત્યમા માધીજીને વૈષ્ણન ભગ્ત તરીક માનીએ છીએ અને એમ વૈત રાહ્યાના આ મારે જૈનાએ પણ માનવ જોઇએ

इत्येव 🕉 अर्हमहाधीर शान्ति ३

વિ મ ૧૯૮૦ ગ્રાન્પ સુિયમી લેખક છાહિમાગર

मृण येवापुर.



